ओ३म्

आर्य जगत्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

रविवार, 19 जुलाई 2026

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र

सप्ताह रविवार, 19 जुलाई 2026 से 25 जुलाई 2026

आषाढ़ शु. 06 ● वि० सं०-2082 ● वर्ष 67, अंक 29, प्रत्येक मंगलवार को प्रकाश्य, दयानन्दाब्द 202 ● सृष्टि-संवत् 1,96,08,53,126 ● पृ.सं. 1-12 ● मूल्य - 5/- रु. ● वार्षिक शु. 300/- रु.

डी.ए.वी. कॉलेज जालन्धर रहा राष्ट्रीय युवा संसद प्रतियोगिता में द्वितीय पद्मश्री डॉ. पूनम सूरी जी ने किया सम्मानित

17 वीं राष्ट्रीय युवा संसद प्रतियोगिता में डी.ए.वी. कॉलेज जालंधर के शानदार प्रदर्शन ने खूब सराहना बटोरी। डी.ए.वी. कॉलेज प्रबंधकीय समिति के अध्यक्ष डॉ. पूनम सूरी ने राष्ट्रीय स्तर पर *'फर्स्ट रनर–अप'* (द्वितीय स्थान) हासिल करने के लिए कॉलेज को बधाई दी। उन्होंने इसे पूरे डी.ए.वी. परिवार के लिए गौरव की बात बताया।

डॉ. सूरी ने कहा कि डीएवी कॉलेज जालंधर भारत का एकमात्र ऐसा कॉलेज है जिसने तीन बार राष्ट्रीय युवा संसद चैंपियनशिप जीती है और चार बार फर्स्ट रनर–अप का स्थान हासिल किया है। उन्होंने प्रिंसिपल डॉ. अनूप कुमार के नेतृत्व की और साथ ही कॉलेज के समर्पित अध्यापकों की तारीफ की, जिनके मार्गदर्शन ने छात्रों को राष्ट्रीय स्तर पर चमकने का मौका मिला। उन्होंने कहा कि इस टीम ने एक बार फिर डी.ए.वी. कॉलेज जालंधर की गौरवशाली परंपराओं को कायम रखा है।

यह राष्ट्रीय सम्मान कानून और न्याय राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) और संसदीय कार्य राज्य मंत्री श्री अर्जुन राम मेघवाल द्वारा जी.एम.सी. बालयोगी ऑडिटोरियम में प्रदान किया गया।

आठ पुरस्कार विजेता यह प्रतियोगिता देश भर के 51 विश्वविद्यालयों और कॉलेजों के बीच आयोजित की गई। प्रिंसिपल डॉ. अनूप कुमार ने कहा कि यह उपलब्धि शैक्षणिक उत्कृष्टता, लोकतांत्रिक मूल्यों और समग्र शिक्षा के प्रति कॉलेज की निरंतर प्रतिबद्धता को दर्शाती है। उन्होंने छात्रों और उनके शिक्षकों को बधाई दी।

डी.ए.वी. पालमपुर में क्षमता संवर्धन कार्यशाला

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, पालमपुर में हि.प्र. जोन–डी. के विभिन्न विद्यालयों के शिक्षकों के लिए दो दिवसीय 'क्षमता संवर्धन कार्यशाला' का आयोजन किया गया। यह कार्यशाला हि.प्र. जोन–डी. के सह–क्षेत्रीय अधिकारी एवं प्रशिक्षण

समन्वयक डॉ. वी.के. यादव तथा संकुल प्रमुख डॉ. विपिन जिस्टू के नेतृत्व में आयोजित गई।

कार्यशाला का शुभारम्भ दीप प्रज्ज्वलन और डी.ए.वी गान के साथ किया गया। डॉ. वी.के. यादव ने विभिन्न विद्यालयों से आए हुए प्राचार्यों एवं शिक्षकों को सम्बोधित किया तथा उनका अभिनन्दन किया।

कार्यशाला के दौरान राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के अनुरूप डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति द्वारा विद्यालयों में किए जा रहे शैक्षणिक नवाचारों पर प्रकाश डाला गया। यह बताया गया कि डी.ए.वी. में शिक्षण को पूरी तरह विद्यार्थी केन्द्रित, दक्षता–आधारित एवं अनुभवात्मक बनाया जा रहा है। जिससे विद्यार्थियों में रचनात्मकता, तार्किक चिन्तन, समस्या समाधान क्षमता तथा जीवन कौशल का विकास सुनिश्चित होगा।

कार्यशाला में वनखंडी, देहरा गोपीपुर, धर्मशाला, कांगू, नदौन, भरौली, नरवाना योल, बागनी नूरपुर, एवं पालमुपर के लगभग 350 अध्यापकों ने बढ़–चढ़कर भाग लिया।

सभी विषयों के प्रशिक्षित विषय विशेषज्ञों ने अपनी प्रस्तुतियों से अध्यापकों का ज्ञानवर्धन किया।

डी.एल. डी.ए.वी. शालीमार बाग, दिल्ली में वृक्षारोपण

डी.एल.डी.ए.वी. स्कूल, शालीमार बाग, दिल्ली के प्रांगण में 'वृक्षारोपण कार्यक्रम' का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम का शुभारम्भ विद्यालय की प्रधानाचार्या श्रीमती निशा शर्मा ने छात्र–छात्राओं के साथ मिलकर विद्यालय वाटिका में पौधों का रोपण कर किया।

प्रधानाचार्या ने कहा कि सर्वप्रथम परमात्मा ने सृष्टि की रचना की, तब मनुष्य के प्रकट होने से पूर्व ही वनस्पतियों और वृक्षों की सृष्टि की, क्योंकि वृक्ष ही समस्त जीवन के आधार हैं। वृक्ष हमें केवल प्राणवायु, फल, पुष्प और औषधियाँ ही प्रदान नहीं करते, अपितु धैर्य, परोपकार, सहनशीलता, न्याय तथा निःस्वार्थ सेवा जैसे दिव्य जीवन–मूल्यों की भी मौन शिक्षा भी देते हैं।

उन्होंने कहा–वृक्षों की निरन्तर कटाई के कारण प्राकृतिक संतुलन एवं पर्यावरण गंभीर रूप से प्रभावित हुए है। यदि मानव जाति को सुरक्षित एवं स्वस्थ भविष्य देना है, तो वृक्षारोपण को जन–आन्दोलन का स्वरूप देना होगा।

प्रधानाचार्या ने विद्यार्थियों का आह्वान किया कि वे अधिक से अधिक वृक्ष लगाने में योगदान दें।

अंत में पर्यावरण संरक्षण एवं वृक्ष संवर्धन का सामूहिक संकल्प लिया।

जो जीवों को देने योग पदार्थों का दाता और ग्रहण करने योग्यों का ग्राहक है, इससे उस ईश्वर का नाम **'होता'** है। स. प्र. समु. १

{संपादक – पूनम सूरी}

ओ३म्
आर्य जगत्
सप्ताह रविवार, 19 जुलाई 2026 से 25 जुलाई 2026

निर्भय बनूँ

● डॉ. रामनाथ वेदालंकार

यदन्ति यच्च दूरके, भयं विन्दति मामिह।
पवमान वि तज्जहि।।

ऋग् ६.६४.२१

ऋषिः **मैत्रावरुणिः वसिष्ठः**। देवता **पवमानः सोमः**। छन्दः **गायत्री**।

● (**यत्**) जो, (**अन्ति**) समीप, (**यत् च**) और जो, (**दूरके**) दूर, (**इह**) यहाँ, (**मां**) मुझे, (**भय**) भय, (**विन्दति**) प्राप्त करता है, (**पवमान**) हे सर्वत्र–संचारी, पवित्रकर्ता सोम प्रभु!, (**तत्**) उसे, (**वि जहि**) विनष्ट करो।

● मनुष्य प्राणियों में सबसे अधिक बुद्धिमान् होता हुआ भी सबसे अधिक भयशील है। अन्य सब पशु, पक्षी, सरीसृप, कीट, पतंग आदि जन्तु भयावह जंगलों में भी निर्भय विचरते हैं। पर मानव घर में भी भयभीत रहता है, दंश, मशक, वृश्चिक, सर्प, आधि, व्याधि, चोर, शत्रु, शासक आदि के भय से व्याकुल रहता है। ये भय आत्म–विश्वास और प्रभु–विश्वास की कमी के कारण होते हैं।

मैं भी समीप के और दूर के अनेक प्रकार के भयों से घिरा हुआ हूँ। समीप में मुझे अपने पड़ोसियों से, साथी–संगियों से, यहाँ तक कि घर के सदस्यों से भी भय लगा रहता है कि ये कहीं मेरा कुछ अनिष्ट न कर दें। अपने मन में सन्देह का बीज बोकर मैं सोचता हूँ कि कहीं ये मेरी हत्या न कर दें, मेरा धन न हड़प लें, मेरा रथ न हर लें। नींद में भी मुझे चोरों के सपने आते है। दूर जाता हूँ। दूर जाता हूँ तो वहाँ भी भय पीछा नहीं छोड़ता। सोचता हूँ कहीं रेलगाड़ी न टकरा जाए, कहीं मोटरकार आदि यान दुर्घटना–ग्रस्त न हो जाए, कहीं लुटेरे मुझे लूट न लें, कहीं मेरे दूर यात्रा पर आये होने के कारण मेरी अनुपस्थिति में परिवार पर कोई संकट न आ जाए। ये सब तो ऐसे भय हैं, जो व्यर्थ ही मेरे शंकाशील मन को उद्विग्न किए रखते हैं; पर इनके अतिरिक्त कई भय सचमुच के भी होते हैं, जिनके भय का कारण वास्तव में उपस्थित होता है। उस समय भी मैं भय–कारणों का प्रतीकार करने के स्थान पर भयग्रस्त हुआ निष्कर्मा खड़ा रहता हूँ। मैं इतना भयशील हूँ कि मुझे सन्ध्या–वन्दन आदि सत्कर्म करते हुए भी भय व्यापे रहता है कि कहीं कोई मेरा उपहास न करे।

इन दूर के तथा समीप के सभी भयों को हे मेरे प्रभु! तुम्हीं दूर कर सकते हो। तुम्हारा सच्चा ध्यान मेरे अन्दर आत्म–संबल उत्पन्न कर सकता है। तुम 'पवमान' हो, सर्वत्र–संचारी, सर्वव्यापी और अन्तःकरण को पवित्र करनेवाले हो। तुम सर्वत्र मेरे चित्त की भय–दशा को जानकर और उससे मुझे मुक्त कर पवित्र करते रहो। हे पवित्रता के देव! तुम मेरे भयों को समूल विनष्ट कर दो, जिससे फिर कभी भय मेरे मानस को आक्रान्त न कर सके। समीप और दूर के सब स्थानों को, सब दिशाओं को, मेरे लिए निर्भय कर दो।

❑

वेद मंजरी से

इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त भावों व विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं और इसमें किसी आपत्तिजनक बात के लिए 'सम्पादक' एवं 'आर्य जगत्' उत्तरदायी नहीं होगा।

एक ही रास्ता

● **महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती**

स्वामी जी करोल बाग में सच्ची ईश्वर भक्ति के सन्दर्भ में वेद कथा कर रहे हैं। अपने पूर्वनाम खुशहाल चन्द को साकार करते हुए अपने गूढ़तम प्रवचन में दृष्टान्तों के माध्यम से श्रोताओं को हँसते–हँसाते वैदिक धर्म का प्रचार कर रहे हैं, लोगों का मार्गदर्शन कर रहे हैं।

मन के मैल को निकालकर विशुद्ध मन से ईश्वर भक्ति करने से मानव परम लक्ष्य मोक्ष को प्राप्त कर सकता है जो कि आत्मा की मंजिल है। मन को पवित्र रखो, परमात्मा पर विश्वास रखो, उसकी कार्य प्रणाली पर शंका मत करो। स्वामी जी ने अकबर बीरबल का बहुत ही सुन्दर, सरल व प्रेरणादायक उदाहरण प्रस्तुत कर इतने गूढ़ रहस्य को समझा दिया–ईश्वर कहाँ रहता है ? उसके दर्शन कैसे हो सकते हैं ? वह क्या करता है ?

स्वामी जी ने अपनी चिर परिचित मुसकान से हास्यरस में सरोबार शैली में अपनी अल्मोड़ा यात्रा का बहुत ही सुन्दर वर्णन किया। स्वामी जी ने विषम परिस्थितियों में सहन शक्ति द्वारा खुश रहने का मन्त्र हमें दिया। यात्रा में पैर टूट जाने पर भी आगामी यात्रा के लिए तैयार रहना, साथियों द्वारा साथ छोड़ जाने पर भी धैर्य न खोना वरन् सच्चे ईश्वर विश्वास के साथ आगे बढ़ते रहना, ये गुण हमारे सच्चे पथ प्रदर्शक होते हैं। इसी उद्देश्य को सफल करने के लिए स्वामी जी उपदेश दे रहे हैं....।

... अब आगे

गरबियांग में पड़े–पड़े तीन दिन बीत गये। मेरे गाइड कीचखम्बा ने कहा, "स्वामी! कब तक यहाँ पड़े रहोगे ? रास्ते बन्द हुए जाते हैं। थोड़े दिनों में बर्फ पड़ने लगेगी, फिर वापस जाने का कोई रास्ता नहीं रहेगा। एक डाण्डी कर लो। उसमें सवार होकर चले जाओ।"

उसके कहने पर डेढ़ सौ रुपये में एक डाण्डी की, उस पर बैठा। आठ मज़दूरों ने डाण्डी को उठाया। जंगल में पहुँचे हम लोग। शाम हो गई थी। आगे काली नदी थी। जंगल में शेर बार–बार गर्ज उठते थे। मजदूरों ने कहा, "इस समय हम आगे नहीं जायेंगे।" मैंने कहा, "मत जाओ।"

उन्होंने लकड़ियाँ इकट्ठी करके मेरे पास आग जला दी जिससे जंगली जानवर निकट न आयें। वे भी सो गये, मैं भी सो गया। प्रातःकाल उठकर देखा कि आठ–के–आठ मजदूर पता नहीं कहाँ चले गये। अपनी डाण्डी भी छोड़ गये थे। मैंने समझा–कहीं इधर–उधर गये होंगे, अभी आ जायेंगे, परन्तु देर हो गई, वे नहीं आए। तब मैंने समझा कि वे डरकर भाग गये हैं और इस सुनसान जंगल में मैं अकेला रह गया हूँ–अकेला और इस दशा में कि एक पग भी चल नहीं सकता। कमण्डल को देखा–वह आधा पानी से भरा था, और नदी थी वहाँ से आधा मील दूर नीचे। बैग में देखा–उसमें केवल छः बिस्कुट थे। थोड़ा–सा पानी पिया और दो बिस्कुट खाके मैं पड़ा रहा। एक दिन गया, दूसरा दिन भी, तीसरा दिन भी। जंगली पशु निकट आकर चले जाते थे। बिस्कुट समाप्त हो गये, पानी भी। अब केवल जीवन समाप्त होना बाकी था कि तीसरे दिन की शाम को छः कुली काली नदी को पार करने वहाँ आ गये। मुझे देखकर आश्चर्य से बोले, "तुम कौन हो ? कैसे यहाँ पड़े हो ?" उन्हें अपनी सारी कहानी सुनाई। वे बोले–"अभी तो हम गरबियांग जा रहे है, तीन दिन बाद आयेंगे। तुम्हें काली नदी के पार अल्मोड़ा ले चलेंगे।"

तीन दिन की रोटियाँ बनाकर वे मुझे दे गये। तीन दिन के लिए पानी भरकर भी दे गये। "उस सुनसान उजाड़ जंगल में किसने भेज दिया उनको ?" मैंने उनसे पूछा। वह उनका आम रास्ता नहीं था। काली नदी के जिस घाट से वे प्रायः आते थे, वह वर्षा के कारण टूट गया था। विवश होकर उन्हें इस रास्ते पर आना पड़ा। किसने तोड़ दिया वह घाट? किसने पहुँचा दिया उनको मेरे पास? प्रभु के अतिरिक्त कौन उस समय मेरे साथ था? साथी चले गये थे। डेढ़ सौ रुपया लेने–वाले मजदूर भाग गये

शेष पृष्ठ 04 पर ☞

अवतारवाद और प्रभु के दूत पूत

● पं. गंगा प्रसाद उपाध्याय

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानम् अधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।
श्रीमद्भगवद्गीता 4.7
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे।।
श्रीमद्भगवद्गीता 4.8

ऐ अर्जुन! जब कभी धर्म का पतन होता है तो उसको फिर से उठाने के लिए मैं स्वयं को उत्पन्न करता हूँ। भले मनुष्यों की रक्षा करने तथा बुरे लोगों को नाश करने के लिए मैं हर युग या काल में जन्म लेता हूँ।

गीता के इन श्लोकों को ईश्वर के अवतार लेने के विषय में प्रस्तुत किया जाता है। श्रीकृष्ण ईश्वर के अवतार थे और अर्जुन से कहते थे कि जब–जब धर्म का नाश होता है और पाप बढ़ जाता है तो धर्म पर चलने वालों की सहायता के लिए और खराब लोगों का नाश करने के लिए जन्म लेता हूँ। इस विचारधारा के अनुसार जब–जब वैदिक धर्म पर आपत्ति आई और वेदों के विरोधियों ने सर उठाया तब–तब परमात्मा ने स्वयं मनुष्य के स्वरूप में अवतरित होकर बुरे मनुष्यों का नाश किया और धर्म का पुनरुद्धार किया। यह विचार हिन्दू धर्म की एक आधारशिला है। महाभारत से पूर्व नरसिंह अवतार, शुक्र अवतार, कच्छ अवतार (कछुवे के रूप में) मच्छ अवतार (मीन के रूप में), राम अवतार आदि होते रहे। इन अवतारों ने राक्षसों को मारकर धर्म को पुनर्जीवित किया।

भारतवर्ष के बाहर इसी नियम ने एक नया रूप ग्रहण किया, उन्होंने इस बात को अधर्म समझा कि ईश्वर अपने उच्च स्थान को छोड़कर धरती के निचले फर्श पर प्रकट होने की आवश्यकता को अनुभव करें। सर्वशक्तिमान् ईश्वर सभी कुछ कर सकता है फिर उन्होंने देखा कि राजा समस्त कार्य स्वयं नहीं करता। उसे क्या आवश्यकता कि अपने सिंहासन से नीचे उतरे ? उसके सेवक काफ़ी हैं। इसलिए ज़र्तुश्त आदि लोगों ने एक नया मत निकाला। इस मत के अनुसार जब कभी धर्म का पतन हुआ है तो ईश्वर ने स्वयम् अपने नबियों को संसार में भेजा है कि वह संसार में लोगों को सत्य मार्ग दिखायें और दुर्जनों का नाश करें इसलिए जो पथ–प्रदर्शक पाश्चात्य देशों में हुए वे ईश्वर तो न थे, परन्तु ईश्वर के एजेण्ट या गवर्नर जनरल अवश्य थे। उनका वही लक्ष्य था जो अवतारों से सम्बन्धित किया जाता है। राम के साथ रावण और कृष्ण के साथ कंस का सम्बन्ध है। मूसा के साथ फिर–ऊन का और ईसा के साथ यहूदी पुजारियों का सम्बन्ध है। हजरत मुहम्मद साहब के साथ मक्का और मदीना के काफ़िरों का एक समूह था, जिससे वह निरन्तर युद्ध करते रहे।

क्यों कोई अवतार व नबी नहीं आया ?–

वेदों का विचार इसके विपरीत है। वेदान्तदर्शन में जहाँ यह प्रश्न उठाया गया है कि ब्रह्म क्या है ? तो उसका उत्तर दिया गया कि वह सर्वोत्तम सत्ता जिससे सृष्टि की रचना व उसका पालन–पोषण और अन्त होता है वही ईश्वर है। यह ईश्वर हर क्षण किसी न किसी वस्तु को जन्म देता और बढ़ाता रहता है तथा उसको मारता भी है। कुरान में भी तो बहुधा आता है कि ईश्वर वह है जो जीवन से मृत्यु तथा मृत्यु से जीवन देता है। हरेक की जन्म और मृत्यु यदि उसी के हाथ में है तो उसे स्वयं जन्म लेने या नबी (देवदूत) भेजने की आवश्यकता नहीं। राजा अपने दूतों को वहाँ भेजता है जहाँ वह स्वयं पहुँच नहीं सकता। ईश्वर तो सीमित सत्ता तथा सीमित शक्ति वाला नहीं। यह हुई युक्ति। अब इतिहास की ओर आइये। हम देखते हैं कि मनुष्यों पर कठिन से कठिन दुःख आये और वे पथ से विचलित भी हुए और अविद्या में भी पड़े रहे परन्तु न तो कोई अवतार हुआ और न कोई नबी या पैगम्बर आया। आज भी बहुत से असभ्य अशिक्षित समाज हैं। इन समाजों पर शासन करने के लिए शक्तिशाली जातियाँ कुछ न कुछ किया करती हैं। इन समाजों में स्वयं भी बहुत सी आन्तरिक त्रुटियाँ हैं जो उनकी सफलता में बाधक होती हैं परन्तु कोई पैगम्बर या नबी नहीं आता। यदि हजरत ईसा के अवतार की बात सत्य होती तो आज दो हजार वर्षों से सैकड़ों समाजों का नाश होता रहा और कोई ईसा फिर न आया और न मुहम्मद साहब और उनके स्थान पर न किसी दूसरे ने जन्म लिया। भारतवर्ष में हत्याएँ होती रहीं, जीवित विधवाएँ अपने मरे हुए पतियों के साथ जलाई जाती रहीं, न कोई अवतार बचाने आया और न कोई पैगम्बर समझाने आया।

ईश्वर अपना कार्य करता है मनुष्य का नहीं–

इससे ज्ञात होता है कि यहाँ जो श्लोक गीता का हम ने दिया है वह केवल स्वयं स्वार्थियों का दम्भ है। परमात्मा मनुष्य के सुधार के लिए न स्वयं आता है और न किसी को भेजता है। वैदिक काल में सैकड़ों ऋषि मुनि और समाज सुधारक उत्पन्न हुए। उन्होंने पथ–प्रदर्शन का कार्य भी किया और लोगों को सन्मार्ग से डिगने से भी बचाया, परन्तु उन्होंने कदापि पैगम्बर होने का दावा नहीं किया। वे केवल अपने उस धर्म का पालन करते रहे जो एक पण्डित अपने काल के अज्ञानी समाज के लिए करता है या एक अध्यापक अपने शिक्षार्थियों के लिए करता है। यदि हम प्राकृतिक नियमों को ध्यान पूर्वक देखें तो ज्ञात होता है कि जो काम मनुष्य को करना चाहिए वह ईश्वर स्वयं नहीं करता। यदि आप अपने घर की मरम्मत न करें तो आँधी बरसात में वह घर गिर जायेगा। ईश्वर अवतार लेकर इस घर की मरम्मत और रक्षा न करेगा। **यदि आप अपने शरीर को प्रतिदिन शुद्ध न करें तो परमात्मा आपके मुख को नहीं धोता। परमात्मा प्रेरणा करता है।** आदेश नहीं देता। जब हम रात को सोने के पश्चात् सवेरे उठते हैं तो प्राकृतिक नियमों के अनुसार हमारे हृदय में यह इच्छा उत्पन्न होती है कि अपने मुँह को शुद्ध करें। मकान साफ किया जाये ईश्वर स्वयं झाड़ू नहीं लगाता। इसी प्रकार अशिक्षित जनता में शिक्षा की इच्छा तो रहती है किन्तु ईश्वर स्वयम् अवतार लेकर कभी स्कूल या पाठशाला खोलने नहीं आता। **प्रेरणा भिन्न वस्तु है और आदेश भिन्न वस्तु।** यदि ईश्वर की ओर से आदेश होता तो कौन–सी शक्ति थी जो उस आदेश की पूर्ति में विघ्न डाल सकती ? इसलिए अवतार लेना या पैगम्बर भेजना यह एक निरर्थक विचार है, वेदों की शिक्षा के विरुद्ध है और इस विश्वास ने धोखेबाजों को दम्भ करने का अवसर प्रदान किया है। जिस मनुष्य में कुछ असाधारण बुद्धि या शक्ति होती है, वही पैगम्बरी का दावेदार हो जाता है।

ईश्वर सब को भेजता है किसी एक को नहीं–

आर्यसमाज के लोगों पर भी गीता के उपर्युक्त श्लोक का हम बहुधा कुछ न कुछ प्रभाव पाते हैं। बहुधा लोगों को कहते सुना है कि वैदिक धर्म की ग्लानि देखकर ईश्वर ने हमारे पथप्रदर्शन के लिए स्वामी दयानन्द को भेजा। तात्पर्य यह है कि वह ईश्वर के भेजे हुए रसूल या पैगम्बर थे। एक दूसरे स्वामी दयानन्द हुए हैं जो सनातन धर्म के प्रसिद्ध उपदेशक थे। उन्होंने अपनी पुस्तक "धर्मकल्पद्रुम" में लिखा है कि आर्यसमाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द भी ईश्वर के अवतार थे। यह अवतारों की परम्परा बराबर चल रही है।

महर्षि दयानन्द ने कभी ऐसा दावा नहीं किया। महर्षि दयानन्द की यह स्वाभाविक इच्छा थी कि वह पथ–भ्रष्ट लोगों को सीधे मार्ग पर लगा दें। उन्होंने जो कुछ किया उसके वे स्वयम् उत्तरदाता थे। महात्मा श्रीकृष्ण ने भी यदि कौरवों को समझाने या पाण्डवों की सहायता करने का प्रयत्न किया तो यह स्वयम् उनकी स्वाभाविक सहानुभूति थी। इसमें न तो ईश्वर के अवतार लेने की आवश्यकता थी और न उसको पैगम्बर भेजने की। महाभारत युग में किसी ने किसी को अवतार नहीं माना। न भीष्म पितामह ने, न युधिष्ठिर ने और उस के भाइयों ने और न दुर्योधन आदि विरोधियों ने। **श्री कृष्ण को अवतार का रूप देने वाले तो महाभारत के बहुत समय के पश्चात् कुछ स्वार्थी मनुष्य हुए जो श्रीकृष्ण का नाम लेकर अज्ञानी लोगों को बहकाने और उनकी अज्ञानता से लाभ उठाते रहे।** स्वामी दयानन्द को परमात्मा की ओर से भेजा हुआ रसूल मानने में स्वामी दयानन्द की महत्ता को बढ़ाना नहीं वरन् कम करना है। जितने लोगों ने पैगम्बरी का दावा किया है उन्होंने अपने को ईश्वर के हाथ का एक औजार बना रखा है। **करता है ईश्वर परन्तु पैगम्बर के हाथ से करता है।** आदेश ईश्वर देता है, परन्तु पैगम्बर के मुख से देता है। इससे पैगम्बर केवल ग्रामोफोन का काम देते हैं। वह किसी काम के लिए स्वयं उत्तरदाता नहीं हैं। स्वामी दयानन्द का ऐसा दावा नहीं है। वे न ईश्वर के अवतार हैं न पैगम्बर। केवल एक समाज सुधारक हैं, जो प्राकृतिक–नियम के अनुसार प्रेरणा पाकर मनुष्य को डिगने से बचाने का प्रयत्न करते हैं। उनके ऊपर कोई नवीन नियम नहीं उतरता और न कोई प्राचीन नियम मनसूख (निरस्त) होता है। ईश्वर के नियम में परिवर्तन की आवश्यकता नहीं। स्वामी दयानन्द के पास कोई दूत किसी स्वर्ग से सन्देश नहीं लाता। महर्षि दयानन्द की शिक्षा में किसी काल्पनिक अर्श,(आकाश heaven) काल्पनिक स्वर्ग या काल्पनिक दूत की आवश्यकता नहीं। वेद की सबसे प्राचीन शिक्षा और ईश्वर की प्राचीन सत्ता यह उसकी प्रेरणा के लिए पर्याप्त है। उन्होंने वही किया जो ऋषि महर्षि प्राचीन काल से करते आये हैं।

लेखक की पुस्तक
'गंगा ज्ञान सागर भाग–2' से साभार

श्री पं. युधिष्ठिर मीमांसक

● डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री

श्रद्धेय पं. ब्रह्मदत्त जिज्ञासु जी की परम्परा के प्रातः स्मरणीय विद्वान् श्री पं. युधिष्ठिर मीमांसक के जीवन और कार्यों पर यह शोधपूर्ण लेख डॉ. ज्वलन्त शास्त्री जी की सशक्त और खोज़ी लेखनी का अद्यतन विद्वानों और शोध छात्रों के लिए एक उपहार है। पाठक इस किंचित् लम्बे लेख से लाभान्वित हों, इस प्रयोजन से इसे धारावाहिक रूप में प्रकाशित कर रहे हैं। यह लेख की छठवीं किश्त है। -सम्पादक

गतांक से आगे...

45. वैदिक–नित्यकर्मविधि– ऋषि दयानन्द रचित संस्कार विधि तथा पंच महायज्ञ विधि में विवृत पाँच महायज्ञों में विनियुक्त मन्त्रों की विशद व्याख्या (पदार्थ सहित)। साथ ही प्रत्येक विधि का विवेचन भी किया गया है तथा अनेक शंकाओं का समाधान भी। प्रारम्भ में 36 (16+20) पृष्ठों की भूमिका में आवश्यक विवरण है। अन्त में कुछ अन्य कृत्यों के मन्त्र, प्रभु भक्ति के पद्य–गीतिका और भजन हैं। साथ ही (i) ँ ॐ चिह्नों का स्वरूप और उच्चारण (ii) समिदाधान मन्त्रों के सम्बन्ध में क्रमशः प्रथम और द्वितीय परिशिष्ट हैं। कुल पृष्ठ–251, प्रथम संस्करण–2028 वि.सं., द्वितीय संस्करण–2036 वि.सं., चतुर्थ संस्करण–2050 वि.सं.।

46. ऋषि दयानन्द के पत्र और विज्ञापन–प्रथम तथा द्वितीय– इन दो भागों में ऋषि दयानन्द के पत्रों और विज्ञापनों का संग्रह है। तृतीय तथा चतुर्थ भाग में ऋषि दयानन्द के प्रति अन्य व्यक्तियों द्वारा लिखित पत्रों और विज्ञापनों का संग्रह किया गया है। द्वितीय और चतुर्थ भाग के अन्त में पत्रों से सम्बद्ध अनेक परिशिष्ट जोड़े गये हैं। तृतीय संस्करण–प्रकाशनकाल–1981–1983 ई.।

मीमांसक जी अपने जीवनकाल की संध्या में इस ग्रन्थ के पुनः संशोधन और परिवर्तन में जुटे हुए थे, क्योंकि तृतीय संस्करण (1981–83 ई.) के बाद भी स्वामी दयानन्द से सम्बद्ध नये–नये पत्र प्रकाश में आ रहे थे, उनका यथोचित स्थानों पर संयोजन तथा तत्सम्बद्ध टिप्पण देना तथा पत्र संख्या और पूर्ण संख्या में भी यथोचित परिवर्तन/परिवर्धन करना था। पूज्य मीमांसक जी ने इन पंक्तियों के लेखक से कहा था–'यह कार्य बड़ा आवश्यक है, यदि यह कार्य मैने नहीं किया तो अब कोई दूसरा इसे नहीं कर पायेगा। अतः मैं सब काम छोड़ कर इस कार्य में जुटा हुआ हूँ।' सन्तोष की बात यह रही कि मीमांसक जी अपने जीवनकाल में इस कार्य को पूरा कर गये। अतः चतुर्थ संस्करण का प्रथम भाग उनके जीवनकाल (अक्टूबर 1993) में ही छप गया, और उनके निधन के अनन्तर आचार्य विजयपाल जी (आचार्य–पाणिनि महाविद्यालय बहालगढ़, सोनीपत–हरियाणा) नें ऋषि के इस पत्र व्यवहार और विज्ञापन के द्वितीय भाग का चतुर्थ संस्करण मई को 1996 ई. में तथा तृतीय और चतुर्थ भाग को क्रमशः फरवरी 1998 ई. तथा जून 1999 ई. में प्रकाशित करा दिया।

47. ऋषि दयानन्द के शास्त्रार्थ और प्रवचन–इस ग्रन्थ में स्वामी दयानन्द का पौराणिक विद्वानों, ईसाई पादरियों तथा मुसलमान मौलवियों के साथ हुए सभी उपलब्ध शास्त्रार्थों का संग्रह है। पूना में 1875 ई. में तथा मुम्बई में 1882 ई. में ऋषि दयानन्द द्वारा दिए गए प्रवचनों, व्याख्यानों तथा उपदेशों का संग्रह भी है। प्रथम संस्करण 1882 ई., पृष्ठ–568 (8+560)।

48. ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों का इतिहास–इस ग्रन्थ में स्वामी दयानन्द सरस्वती के प्रत्येक ग्रन्थ का विशद इतिहास दिया गया है। उनके ग्रन्थों की पाण्डुलिपियों और उस समय तक अमुद्रित ग्रन्थों का विस्तृत विवरण दिया है। अनेक परिशिष्टों में विविध प्रकार की प्राचीन उपयोगी ऐतिहासिक सामग्री का संकलन किया गया है। प्रथम संस्करण–1949 ई., द्वितीय परिष्कृत तथा परिवर्धित संस्करण (132 पृष्ठ परिवर्धित)–1933 ई., तृतीय संस्करण–2018 ई.। (मीमांसक जी के निधन के बाद छपे इस तृतीय संस्करण को प्रमादवश प्रकाशक ने द्वितीय संस्करण छाप दिया है–लेखक)

49. दयानन्दीय–लघुग्रन्थ–संग्रहः (आर्यसमाज–शताब्दी संस्करण)– प्रथम संस्करण 1975 ई., कुल पृष्ठ 866 (100+766)। इसमें निम्न ग्रन्थ संगृहीत हैं–

1. स्वामी दयानन्द सरस्वती का आत्म चरित्र (लिखित वा कथित)
2. आर्याभिविनय
3. वेदभाष्य का प्रथम (नमूने का) अंक
4. भ्रान्ति–निवारण
5. भ्रमोच्छेदन
6. पंचमहायज्ञविधि
7. वेदान्ति–ध्वान्त–निवारण
8. वेदविरुद्धमतखण्डन
9. शिक्षापत्री–ध्वान्त–निवारण
10. भागवत–खण्डनम्
11. व्यवहारभानु
12. गोकरुणानिधि
13. आर्योद्देश्य–रत्नमाला
14. चतुर्वेद– विषय–सूची।

अन्त में अनेकविध 1 से 9 तक परिशिष्ट हैं। कहना न होगा कि ऋषि दयानन्द के इन लघु ग्रन्थों का शुद्धतम पाठ के साथ ऐतिहासिक विवरण प्रस्तुत करनेवाला यह संग्रह शोधार्थियों और दयानन्द–वाङ्मय के जिज्ञासुओं के द्वारा संग्रहणीय है।

50. ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज से सम्बद्ध महत्त्वपूर्ण अभिलेख–संकलयिता–युधिष्ठिर मीमांसक। प्रथम वार 2039 वि.सं.। इसमें ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज से सम्बद्ध 11 महत्त्वपूर्ण अभिलेखों का संकलन किया गया है, जिससे ऋषि दयानन्द के जीवन चरित और उनके ग्रन्थों तथा आर्य समाज के प्रारम्भिक इतिहास के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण और प्रामाणिक जानकारी मिलती है। दयानन्द और आर्यसमाज–विषयक शोध– गवेषणा के निमित्त इन सामग्रियों का पर्यालोचन अनिवार्य है।

51. अथ शास्त्रार्थ और सद्धर्मविचार– स्वामी दयानन्द सरस्वती के काशी–शास्त्रार्थ का यथार्थ विवरण उसी वर्ष वि.सं.–1926 (1869 ई.) में संस्कृत तथा भाषा में छपा था। उसी की यथावत् प्रतिलिपि–परक यह पुस्तिका है, जिसे मीमांसक जी ने अपने अध्यवसाय से प्राप्त किया और इसे प्रकाशित कर दिया। प्रथम संस्करण–1987 ई.। शास्त्रार्थ के विवरण के बाद स्वामी जी से किये गये 44 प्रश्न और उन प्रश्नों का स्वामी जी द्वारा प्रदत्त उत्तर भी संस्कृत तथा भाषा में छपा था, जिसे यहाँ भी छापा गया है। ये प्रश्न किसने किये थे, इसका उल्लेख नहीं है। इस प्रश्नोत्तर से ऋषि दयानन्द के विचारों का क्रमशः विकास भी जाना जाता है। ऋषि दयानन्द की रचनाओं में प्रारम्भिक काल की एक अन्य पुस्तक भागवत–खण्डनम् को भी मीमांसक जी ने ही खोजा था और उसे प्रकाशित भी किया था। क्रमशः

अध्यापक आवास, स्टेशन रोड, अमेठी (उत्तर–प्रदेश)–227405

☞ पृष्ठ 02 का शेष

एक ही रास्ता

थे परन्तु आनन्द स्वामी का वह महान् प्रभु, जो कभी कहीं जाता नहीं, उसने छः व्यक्तियों को ठीक उस दिन मेरे पास भेज दिया जब सब–कुछ समाप्त हो गया था।

छः दिन उस जंगल में बैठा रहा मैं। पाँव हिलता नहीं था। वे कुली आये, सहारा देकर मुझे अपने साथ ले चले। इनकी सूचना ठीक थी। काली नदी के उस पार पहाड़ टूट गया था। रास्ता टूट गया था। ऊपर जाने का कोई मार्ग न था। तभी एक कुली ने कहा, "एक रास्ता है। हम लोग दूसरे रास्ते से ऊपर जायेंगे। ऊपर से रस्सा नीचे लटका देंगे। तुम अपने को रस्से के साथ बाँध लेना, हम तुम्हें ऊपर खेंच लेंगे।" ऐसा ही किया उन्होंने; जैसे कुएँ से बाल्टी खेंचते हैं, इस प्रकार खेंचा उन्होंने मुझे। परन्तु कुएँ की दीवार तो होती है सीधी, वह था पहाड़। कभी कोई चट्टान इधर आकर लगती, कभी उधर। बचता–बचाता मैं पहुँच गया ऊपर। परन्तु थोड़ी ही दूर जाने पर पता लगा कि आगे एक और पहाड़ टूटा पड़ा है; सड़क बहकर खाई में चली गई है। केवल आधा फीट चौड़ा एक मार्ग है, इसपर से होकर दो फर्लांग जाना पड़ेगा। पहले कुली मुझे सहारा देकर चलते थे, एक इधर एक उधर। इस जगह मुझे सहारा कौन देता? वहाँ तो एक आदमी के पाँव रखने की जगह भी न थी। मैंने सोचा–'अब बचूँगा नहीं।' बैग से एक कागज निकाला, उस पर लिखा–"मेरी सारी सम्पत्ति वही है जो इस बैग और बिस्तर में है। यदि मैं मर जाऊँ तो मेरा यह स्वीकार–पत्र है कि बैग और बिस्तरे का सामान कुली लोग आपस में बाँट लें और दिल्ली में श्री धुरेन्द्र शास्त्री को और 'मिलाप' वालों को सूचना दे दें कि आनन्द स्वामी मर गया है।"

यह स्वीकार–पत्र लिखकर मैं प्रार्थना करने के लिए बैठा और अकेला चल पड़ा, बिना सहारे के। देखनेवाले चकित हुए, मैं भी चकित हुआ। दो फर्लांग का वह रास्ता बिना सहारे के मैंने इस प्रकार पार कर लिया जैसे वह एक पग रास्ता हो। कौन उस समय मेरे साथ था? साथी चले गये, रुपया लेने–वाले मजदूर चले गये, तरस खानेवाले कुली भी साथ नहीं दे सकते थे। पाँव चलता नहीं था। फिर किसने उस लम्बे और तंग रास्ते पर मेरी रक्षा की, जिसके दोनों ओर गहरी खाइयाँ थीं ?

सुनो ! सुनो! ऐ दुनियावालो! ऐ भगवान् को न माननेवालो! उसके अतिरिक्त और कोई सहायता नहीं करता। वह प्रत्येक स्थान पर सहायता करता है। जब सब लोग छोड़ जाते हैं, तब वही आकर सहायता देता है। जो उसपर विश्वास करता है उसका बेड़ा पार अवश्य होता है।

परन्तु मैं तो ओ३म् की बात कहना चाहता था आपसे। अब समय हो गया है, इसलिए बात फिर कहूँगा।

ओ३म् तत् सत् ! क्रमशः

पं. नगजीराम शर्मा

● डॉ. भवानीलाल भारतीय

संवत् 1938 के आश्विन शुक्ला 14 चतुर्दशी गुरुवार तदनुसार सन् 1881 ईसवी के अक्टूबर की 6 तारीख को स्वामी जी का बनेड़े आना हुआ। उसके एक दिन पहले स्वामी जी ने मसूदे के निवासी पण्डित जगन्नाथ जी दाधीच जो स्वामी जी के पास उपदेशक थे, उसके संग श्रीमान् मान्यवर महामान्य क्षत्रधर्म धुरन्धर बनेड़ाधीश श्री श्री 108 श्री गोविन्दसिंह जी के पास आने को पत्र द्वारा सूचना दिलाई। उक्त पण्डित जी ने स्वामी जी का पत्र राजाधिराज के नजर कर फिर शहर के बाजार के बीच जो श्यामबिहारी जी का मन्दिर है उस की सीढ़ियों पर खड़े होके मूर्ति खण्डन के विषय में ज़ोर का व्याख्यान दिया जिसको श्रवण करने से सब प्रजा उसका खण्डन करने लगी और राजा साहब को भी इस व्याख्यान की सूचना मिली। परंच राजा साहेब ने इस पर कुछ ध्यान न दे उक्त पण्डित जी को छत्रियाँ नामक स्थान में उतार के भोजन आदि का प्रबन्ध करा दिया।

नियत दिन प्रातःकाल ही ग्राम में सूर्य पोल नामी दरवाजे से बाहिर पूर्व को अन्दाजन पाँच सौ गज की दूरी पर जो झालरा नामक एक रमणीक शिव जी का मन्दिर और उसके समीप ही उसी नाम से एक बड़ा भारी कूप है, वहाँ भूमि को साफ करा उक्त पण्डित जी के कथनानुकूल एक डेरा स्वामी जी के लिए खड़ा करवा के बिछायत के लिए जाजमें भेज रसोई वगैरह बनाने के स्थान आदि का सब प्रबन्ध उत्तमता के साथ करा दिया। स्वामी जी मध्याह्न के पहले ही हुजूर के नियत किए गये स्थान पर पधार गए।

आश्विन शुक्ला पूर्णिमा शुक्रवार तदनुसार ता. 7 अक्टूबर को हुजूर दिन के तीन बजे के करीब अपने दोनों राजकुमार और राजपण्डित तथा दीवान आदि बड़े–बड़े अहलकार सरदार और शहर के बड़े–बड़े सेठ साहूकारों सहित बड़े समारोह के साथ स्वामी जी के पास उक्त स्थान पर सत्संग के लिए पधारे। उस समय स्वामी जी अपने डेरे के द्वार के पास ही कुर्सी पर पश्चिमाभिमुख बैठे थे, सामने बिछायत हो रही थी। हुजूर घोड़े से उतर दोनों हाथ जोड़ प्रणाम कर स्वामी जी के सम्मुख छह सात गज की दूरी से एक कुर्सी पर पूर्वाभिमुख बैठ गए। दोनों राजकुमार भी हुजूर के दाहिनी ओर जाजम पर ही बैठे। उनके दाहिने तरफ राजपण्डित बहादुर जी नवलगढ़ रहने वाले आद गौड़ ब्राह्मण थे वे बैठे। उस समय राजपूताने भर में ये अद्वितीय विद्वान् थे।

संवत् 1924 में यहाँ चक्राङ्कितों से शास्त्रार्थ के लिए स्वामी जीवनगिरी जी बुलाए गए और उस शास्त्रार्थ में चक्राङ्कितों को परास्त करने में इनकी विद्वत्ता पर चकित हो हुजूर ने अपने को पढ़ाने के लिए स्वामी जी से इन को माँग लिया था। इनके दाहिने ओर पण्डित मोडीराम जी जो यहाँ के पुरोहितों में थे वे बैठे, हम लोग उस समय उनके पास पढ़ते थे इसलिए उनके पृष्ठ भाग में जा बैठे, इससे हम लोगों को स्वामी जी और हुजूर के बीच सान्निध्य में बैठने का सुअवसर मिल गया।

हुजूर के बाईं तरफ की पंक्ति में सरदार और बड़े अहलकार बैठे और पृष्ठ पर साधारण अहलकार और साहूकार तथा साधारण ब्राह्मणादि बैठे। विशेष दर्शकों की भीड़ होने से कुछ दूरी पर बहुत से मनुष्य खड़े भी रहे। हुजूर ने स्वामी जी के शुभागमन की और विद्वत्ता की संस्कृत भाषा में बहुत ही प्रशंसा की और अपने को आपके पधारने से कृतकृत्य माना। स्वामी जी महाराज ने भी हुजूर की कुशलता पूछने पूर्वक बहुत प्रशंसा की। तदनुसार हुजूर ने सब के विदितार्थ भाषा में जीव और ब्रह्म के विषय में जिज्ञासु हो कर प्रश्न उठाया। जिस पर स्वामी जी महाराज ने अपनी स्वाभाविक सिंह गर्जना की मधुर ध्वनि के साथ–जीव और ब्रह्म की भिन्नता का वर्णन करना प्रारम्भ किया, जिस को श्रवण कर हुजूर ने भी उपनिषदों के और गीता आदि ग्रन्थों के प्रमाणों से द्वित्व भाव को खण्डन कर एकता का मण्डन किया। परञ्च स्वामी जी को यह असह्य सा प्रतीत होता देख हुजूर ने बहुत ही नम्रता के साथ मण्डूकादि उपनिषदों के प्रमाणों से एकता ही पर ताने का भाव प्रकट किया। उस समय पण्डित बहादुर जी भी वेदान्त सूत्रादि के प्रमाण एकता विषयक देने लगे, परन्तु हुजूर उनको रोक कर स्वयं प्रमाण देने में उद्यत हुए।

स्वामी जी हुजूर का विद्या में इस प्रकार साहस देख अपने से विरुद्ध होने पर भी हर्ष के साथ बोल उठे कि राजा साहेब! मैं आपको धन्यवाद देता हूँ। इस समय के राजाओं में आपको प्राचीन श्रेणी के राजर्षियों की श्रेणी का मानता हूँ। मैंने जिस कार्य के लिए संन्यस्त होने को स्वीकार कर भूमि पर भ्रमण करने का भार उठाया। वह कार्य मेरा यहाँ सिद्ध हो गया। मैं परमेश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि भारत के सब राजाओं को शीघ्र ही आपके समान सद्धर्म और विद्या के प्रेमी बना देवें। आपके यहाँ विद्या और धर्म का प्रचार देख कर मेरे को न किसी प्रकार व्याख्यान और उपदेश देने की आवश्यकता है। आवश्यकता केवल आप से सत्संगति करने की है।

स्वामी जी हुजूर (बनेड़ाधीश) का विद्या में इस प्रकार साहस देख अपने से विरुद्ध होने पर भी हर्ष के साथ बोल उठे कि राजा साहेब! मैं आपको धन्यवाद देता हूँ। इस समय के राजाओं में आपको प्राचीन श्रेणी के राजर्षियों की श्रेणी का मानता हूँ। मैंने जिस कार्य के लिए संन्यस्त होने को स्वीकार कर भूमि पर भ्रमण करने का भार उठाया। वह कार्य मेरा यहाँ सिद्ध हो गया। मैं परमेश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि भारत के सब राजाओं को शीघ्र ही आपके समान सद्धर्म और विद्या के प्रेमी बना देवें।

स्वामी जी के ऐसे वाक्य सुनकर राजा साहेब ने दोनों हाथ जोड़ कर प्रणाम कर बहुत ही नम्रता के साथ स्वामी जी की श्लाघा की।

तदनन्तर स्वामी जी ने हुजूर की दिनचर्या पूछी तो पण्डित बहादुर जी ने जिस प्रकार कह सुनाई उसका संक्षिप्त निम्न है कि श्रीमान् हुजूर दिन रात्रि को तीस मुहूर्तों में बाँट के सर्व समय को सार्थकता के साथ इस प्रकार निकालते हैं कि रात्रि के बारहवें मुहूर्त्त यानि तृतीय प्रहर बजते ही सदैव शय्या को त्याग मांगलिक पदार्थ देखकर संक्षिप्तता से परम पिता जगदीश्वर का स्मरण कर विधिवत् शौचादिक से निवृत्त हो वेदमन्त्रों से पवित्र किए हुए स्वच्छ जल से स्नान कर उसी समय से आरम्भ कर श्रीसूर्य भगवान् के अर्धोदित होने पर्यन्त तीन हजार गायत्री मन्त्र के जपों की समाप्ति कर सूर्य भगवान् को अर्घ प्रदान करते हैं। रात्रि के तेरहवें, चौदहवें और पन्द्रहवें मुहूर्तों को उक्त कर्म से सार्थक कर फिर सूर्योदय के प्रथम मुहूर्त में विधिपूर्वक अग्निहोत्र कर यहाँ के राजाओं की पारम्पर्य रीत्यनुकूल नित्य दानादि देकर फिर दिन के द्वितीय मुहूर्त में अपने इष्टदेव श्री नृत्यगोपाल जी के मन्दिर में पधार मंगल आरती के समय शुद्ध मन से श्री भगवान् का दर्शन कर फिर वेदपाठ करने को विराज जाते हैं और पारायण करने वाले चार पाँच अन्य ब्राह्मण भी उपस्थित हो जाते हैं, फिर राजकुमारादि हम सब सरस्वती भण्डार में से अपने–अपने नाम पर नियत की हुई संहिता की पुस्तकों को ले–ले कर अपने अपने आसन पर बैठे श्री हुजूर के संग मासिक पारायण के नियमानुकूल शुक्ल यजुर्वेद संहिता के एक वा दो अध्याय का पाठ करते हैं। पाठ समाप्त होते ही दोनों राजकुमार अपनी–अपनी पाठ्य पुस्तकों को पढ़ने लग जाते हैं और श्रीजी हुजूर पुरुष सूक्त और विष्णुसहस्र नाम का पाठ करते हैं। यहाँ पण्डितों को सदा दक्षिणा मिलने का प्रबन्ध होने से कोई विदेशी पण्डित आ जाता है तो उसको दानाध्यक्ष उसी मौके में श्री जी के मन्दिर में लाकर आशीर्वाद कहा आसन देकर बैठा देते हैं।

श्री जी हुजूर का पाठ पूरा होने पर उन पण्डितों से बहुत नम्रता के साथ जिज्ञासु के समान शास्त्र विषय का प्रश्न कर उनसे शास्त्र विषयों का श्रवण करते हैं और उनमें अगर वेदपाठी होवे तो वेद के पाठ को सुन प्रसन्नता प्रकट करते हैं। यहाँ व्याकरण, ज्योतिष, वेदान्त, पुराणादि के पठित को पाँच रुपये से सात रुपये पर्यन्त और वेदपाठी को सात रुपये से पन्द्रह रुपये पर्यन्त योग्यतानुकूल नियत दक्षिणा और भोजन के लिए उत्तम पुष्कल पदार्थ जितने दिन रहे उतने दिन पर्यन्त मिलता है। यदि उनमें कोई उसी दिन जाने की इच्छा प्रकट करे तो उस को उसी दिन विदा हो जाती है, छह मास के अनन्तर किसी पण्डित के फिर आ जाने में उक्त दक्षिणा फिर मिल जाती है। यदि कोई दिन विदेशी पण्डित नहीं आवे तो इच्छानुकूल शास्त्र विषय को श्रवण कर तीसरे मुहूर्त की समाप्ति में श्री जी के नियत राजभोग की आरती के समय दर्शन कर फिर चौथे मुहूर्त में महलों में पधार वेद–विधान पूर्वक भोजन करते हैं। फिर राजधर्मो के नियमानुसार सभ्य जनों के साथ राजसभा में पधार कर नित्य खर्च आदि

शेष पृष्ठ 09 पर ☞

वेदों का महत्त्व

● आचार्य (डॉ.) विशुद्धानन्द मिश्र

संन्यसेत् सर्वकर्माणि वेदमेकं न संन्यसेत्।

सच है, **'यस्य निःश्वसिता वेदाः'**—जिस प्रभु के वेद निश्वास हैं तो वे वेद परम प्रभु के प्यारे पुत्र जीवात्मा के भी श्वास और निश्वास बनकर क्यों न रहें! अतएव कहा गया है कि **"संन्यसेत् सर्वकर्माणि वेदमेकं न संन्यसेत्।"** अर्थात् "अनध्याय या अन्य कर्मों के वर्जन के अवसरों पर भी सब कार्य छोड़े जा सकते हैं, परन्तु वेद के स्वाध्याय के लिए कदापि कोई विराम शास्त्रानुमन्य नहीं है।" और यह पूर्ण सत्य है कि वेद भगवान् की कोई भी आज्ञा आर्यजनों के लिए अकाट्य और अनुसरणीय है। वेद इसके स्वतःप्रमाण और अन्तिम प्रमाण हैं। सिद्धान्ततः यह बात ठीक है, परन्तु महान् दुःख की बात है कि व्यावहारिक रूप में वेद को इंग्लैण्ड के सम्राट् का स्थान भर प्राप्त है। यह सिंहासन पर विराजमान है, पर आज्ञायें उनके अनुचर गीता, भागवत, पुराण आदि ही की चलती हैं। मन्दिरों में, घरों में, प्रवचनों में और देवी—जागरणों में पाठ होता है तो **दुर्गासप्तशती** का, **रामायण** की आरती के समय अपने इष्टदेव की नीराजना (आरती) करने में पढ़े जानेवाले श्लोक आधुनिक मत—पन्थानुगामी मनुष्यों के गाये जायेंगे, पर वेद मंत्रों का पारायण कथावाचकों से उपेक्षित पड़ा है। आकर्षक प्रवचनों में जिन पर श्रद्धा—सम्पन्न और भक्त जनता न्योछावर है, सर्वात्मना समर्पित है, वहाँ यदि वे सनातन धर्म के कथावाचक सन्त पुरुष मंगलाचरण के रूप में न्यूनतः वेद के किसी सूक्त या मंत्र का पाठ सस्वर कराया करें, तो वेदों के प्रचार—प्रसार की ओर जन—जन की अभिरुचि निश्चित रूप से जाग्रत हो जाये। मैंने एक बार श्रद्धेय सन्त श्री आसाराम जी के प्रवचन में वेद—पाठ कराये जाते हुए देखा और सुना तो मेरे आनन्द की सीमा नहीं रही। दुर्भाग्य है, अनुताप की बात है कि आज करोड़ों हिन्दुओं ने वेदों के नाम तक नहीं सुने हैं। आज अदना—से—अदना मुसलमान को कलमा याद है, परन्तु हिन्दू को 'गायत्री मंत्र' याद नहीं है। मुझे अति आश्चर्य हुआ जब मैं उत्तर प्रदेश के महामहिम राज्यपाल द्वारा मनोनीत होकर **संस्कृत अकादमी संस्थान** की बैठक में सम्मिलित हुआ। श्रद्धेय श्री बलदेव उपाध्याय अध्यक्षता कर रहे थे। मैंने देखा कि काशी के पण्डितों तथा संस्कृत के अन्य विद्वानों की उपस्थिति में संस्कृत में कोई मंगलाचरण तक नहीं किया गया। मैंने आक्षेप किया कि "हमें बैठक प्रारम्भ करने से पूर्व मंगलाचरण तो अवश्य करना चाहिए।" तो मेरे प्रस्ताव का विरोध करते हुए लखनऊ विश्वविद्यालय के एक संस्कृत प्रोफेसर ने कहा कि "क्या आपको पता नहीं है कि हमारे संस्थान को 30 लाख रुपये उस सरकार से मिलते हैं, जो सैक्युलर है। इस पर कुप्रभाव पड़ेगा।" मैंने कहा—"आपको पता नहीं है कि मद्रास हाईकोर्ट ने निर्णय में गायत्री मंत्र को सैक्युलर घोषित कर दिया है और सारे वेदों में संज्ञान—सूक्त, पृथिवीसूक्त आदि क्या सैकुलर नहीं हैं?" विचारशील सोचें, संस्कृत विद्वानों तक की यह सोच कितनी परिपीड़क एवं हास्यास्पद है!

यद्यपि यह संतोष की बात है कि महर्षि दयानन्द द्वारा वेद—प्रचारार्थ जो क्रान्तिमय आन्दोलन छेड़ा गया था, उसके भाष्य और प्रबल आलोचनाओं ने विश्व के वेदप्रेमियों को झकझोर दिया। परिणामतः उन सबकी चिन्तन—दिशाओं में सुधार एवं परिवर्तन आया, जिसकी हमें प्रशंसा करनी चाहिये। मुझे स्मरण है कि त्रिवेणी—तट पर बसाये गये **'भारद्वाजपुरम्'** में 1992 में विश्व हिन्दू परिषद् के तत्त्वावधान में आयोजित सम्मेलनों में दस दिनों के लिए जो 10 विषय निर्धारित किये गये थे, उन सभी में वेद और दर्शन, वेद और पुराण, वेद और इतिहास आदि विषयों में वेद सबके साथ अवश्य जुड़ा था। 'वेद—दर्शन' सम्मेलन में समायोजक संस्कृत के उद्भट विद्वान् आचार्य श्री रामनाथ जी 'सुमन' ने मुझे अध्यक्षता का दायित्व सौंपा था। गुजरात से आये हुये श्रीमद्भागवत के कथा—वाचक एक सन्त ने सगर्व घोषणायें की कि **"वेद के लिए जितना काम स्वामी दयानन्द सरस्वती ने किया उतना कई शताब्दियों में अन्यों ने नहीं किया।"**

यहाँ पर मैं पौराणिक विद्वान् श्री रामगोविन्द त्रिवेदी जी के महर्षि दयानन्द के प्रति व्यक्त किये उद्गारों का उल्लेख करने का लोभ संवरण नहीं कर सकता, अतः वे उद्धृत हैं यथा,

"आर्यसमाज के प्रवर्त्तक स्वामी दयानन्द सरस्वती वेदों के परम भक्त थे। उन्होंने आर्यसमाज की नींव वेदों के आधार पर ही रखी थी। वे भारत में ही नहीं, समस्त विश्व में वेदों का मेघमन्द्र निनाद सुनना चाहते थे। वस्तुतः स्वामी जी वेद—प्रचार के लिए ही जिये और मरे। उन्होंने ऋग्वेद का तीन चौथाई और यजुर्वेद का सम्पूर्ण भाष्य किया था। इसके सिवा उन्होंने कितने ही आलोचना—ग्रन्थ भी लिखे और वैदिक साहित्य के सम्बन्ध में अगणित व्याख्यान दिये तथा लेख लिखे।"

> **पौराणिक विद्वान् श्री रामगोविन्द त्रिवेदी जी के महर्षि दयानन्द के प्रति व्यक्त किये उद्गार–**
>
> **'आर्यसमाज के प्रवर्त्तक स्वामी दयानन्द सरस्वती वेदों के परम भक्त थे। उन्होंने आर्यसमाज की नींव वेदों के आधार पर ही रखी थी। वे भारत में ही नहीं, समस्त विश्व में वेदों का मेघमन्द्र निनाद सुनना चाहते थे। वस्तुतः स्वामी जी वेद-प्रचार के लिए ही जिये और मरे। उन्होंने ऋग्वेद का तीन चौथाई और यजुर्वेद का सम्पूर्ण भाष्य किया था। इसके सिवा उन्होंने कितने ही आलोचना-ग्रन्थ भी लिखे और वैदिक साहित्य के सम्बन्ध में अगणित व्याख्यान दिये तथा लेख लिखे।'**

आगे चलकर पं. श्री रामगोविन्द त्रिवेदी जी ने आर्यसमाज संस्था के विषय में भी अपनी निष्पक्ष सम्मति रखते हुए लिखा है—

"स्वामी जी के बाद उनके अनुयायियों ने अनेक अमूल्य वेद—ग्रन्थों के प्रकाशन, सम्पादन और अनुवाद किये।" आर्यसमाज की ओर से चारों वेदों की एक—एक संहिता का अनुवाद हो चुका है। कितनी ही वेद—संस्थायें स्थापित हो चुकी हैं। वेद—प्रचार के लिये कुछ पत्र—पत्रिकायें निकलती हैं।" फिर त्रिवेदी जी आगे लिखते हैं— "यह सब होते हुये भी आर्यसमाज के वैदिक ग्रन्थ उपेक्षा की दृष्टि से देखे जाते हैं। सनातनी ही नहीं, विदेशी विद्वान् भी आर्यसमाजी वेदज्ञों को उपेक्षा की दृष्टि से ही देखते हैं क्योंकि इसके कई कारण हैं। यथा—

1. आर्यसमाजी चार संहिताओं को ही वेद मानते हैं, शेष संहिताओं को इनकी शाखायें मानते हैं।
2. आर्यसमाज देवतावाद को नहीं मानता है।
3. आर्यसमाज याज्ञिक पक्ष को भी नहीं मानता है।
4. आर्यसमाज भाषाविज्ञान की भी चिन्ता नहीं करता है।
5. आर्यसमाज वेदों में इतिहास को नहीं मानता, वेदों के ऐतिहासिक व्यक्तियों, नदियों, पर्वतों, उन सबका केवल यौगिक अर्थ करता है।
6. आर्यसमाज के विचार से वेदों में न तो अवतारवाद है, न श्राद्ध है, न मृतपितृलोक की बात है।
7. मूल वेद को ग्रन्थ समझने वाले किसी निष्पक्ष विद्वान् के लिए इन सारे सिद्धान्तों को मानना असम्भव है। यही कारण है कि वेदों का केवल आध्यात्मिक अर्थ करने वाले सज्जन किसी भी अधिकारी वेद—विज्ञाता विद्वान् को अपने सिद्धान्तों से अब तक सन्तोष नहीं दिला पाये।

सम्मान्य सनातनी विद्वान् श्री त्रिवेदी जी की आर्यसमाजियों पर यह टिप्पणी है और उन्होंने साथ ही ऋषि दयानन्द जी की वेद—सम्बन्धी मान्यताओं को भी अंशतः उजागर किया है। हमें केवल उनके छठी संख्या पर व्यक्त किये गये विचारों पर संक्षिप्त रूप में कहना है। विशेष रूप में तो हमने महान् पौराणिक विद्वान् श्री करपात्री जी के नेतृत्व में भारत के प्रसिद्ध 14 पण्डितों द्वारा ऋषि दयानन्द सरस्वती रचित 'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका' के खण्डन में लिखित 'वेदार्थ—पारिजात' नामक महाग्रन्थ के आक्षेपों के समाधान में 'वेदार्थ—कल्पद्रुम' नामक ग्रन्थ तीन खण्डों में मैंने तथा मेरी विदुषी धर्मपत्नी श्रीमती निर्मला देवी पुराणेतिहास—साहित्याचार्य ने लिखा है। विशेष जिज्ञासु वहाँ देखें। उक्त सभी प्रश्न श्री करपात्री जी ने उठाये हैं। प्रथम प्रश्न के समाधान में यजुर्वेद के मंत्र **"तस्माद् यज्ञात् सर्वहुतः ऋचः सामानि जज्ञिरे। छन्दांसि जज्ञिरे तस्माद् यजुः तस्मादजायत"** (यजु. 31—7) में परम प्रमाण है। मीमांसा, मनुस्मृति, महाभाष्यादि के प्रमाण यहाँ उद्धृत नहीं किये जा रहे हैं।

आर्यसमाज देवतावाद को नहीं मानता—यह आक्षेपपरक कथन निःसार है क्योंकि निरुक्त में प्रतिपादित जड़ सूर्यादि और चेतन विद्वान् पुरुष तथा देवताओं का देव महादेव परमेश्वर आर्यसमाज को मान्य हैं। मातृ, पितृ, आचार्य, अतिथि विग्रहवान् (शरीरधारी) देवता और अमूर्तिमान् परमेश्वर ये तैत्तिरीयोपनिषद्—प्रतिपादित पितृदेव

शेष पृष्ठ 09 पर ☞

वैदिक साहित्य में श्रीराधा-भाग 2

● कृतेश पटेल

हम अब तक उन उपनिषदों की समीक्षा कर चुके हैं, जिनके आधार पर राधामार्गी सम्प्रदाय देवी राधा की प्राचीनता एवं वैदिक प्रमाणिकता सिद्ध करने का प्रयास करता है। इनमें मुख्यतः **गोपालतापनी उपनिषद्, राधोपनिषद्** तथा **राधिकातापनी उपनिषद्** की चर्चा की जा चुकी है।

इस लेख में हम अन्य प्रमाणों की समीक्षा करेंगे।

नीलकण्ठ के भाष्य में राधा

आचार्य नीलकण्ठ महाभारत के अत्यन्त प्रसिद्ध टीकाकार हैं और उनकी टीका का ऐतिहासिक महत्त्व भी है। महाभारत पर भाष्य लिखने के अतिरिक्त उन्होंने **मन्त्ररामायण** तथा **मन्त्रमहाभारत** नामक ग्रन्थों की भी रचना की, जिनमें रामायण और महाभारत की घटनाओं को वेदमन्त्रों में खोजने का प्रयास किया गया है।

वास्तव में सत्रहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध तक राधामार्गी वैष्णव सम्प्रदाय का प्रभाव अत्यधिक बढ़ चुका था और अपने सिद्धान्तों को वेदों में सिद्ध करने की प्रवृत्ति भी प्रबल हो गई थी। इसी प्रवृत्ति के प्रभाव में नीलकण्ठ ने ऋग्वेद के मन्त्र **3.33.12** में श्रीराधा का उल्लेख होने का दावा किया है—

अतारिषुर्भरता गव्यवः समभक्त विप्रः सुमतिं नदीनाम्।
प्र पिन्वध्वमिषयन्तीः सुराधा आ वक्षणाः पृणध्वं यात शीभम्।।

इस मन्त्र में 'सुराधा' शब्द आया है। यह मन्त्र नदीसूक्त के अन्तर्गत है, जिसे पौराणिक परम्परा विश्वामित्र और नदियों के संवाद के रूप में प्रस्तुत करती है। इस संवाद का वास्तविक स्वरूप क्या है, इसका विस्तृत विवेचन आर्यजगत् के विद्वान् पण्डित चमूपति ने अपने ग्रन्थ **'यास्कयुग'** में किया है। इसलिए उस विषय की पुनरावृत्ति यहाँ आवश्यक नहीं है। पहले हम देखते हैं कि इस मन्त्र का अर्थ नीलकण्ठ ने किस प्रकार किया है।

नीलकण्ठ के अनुसार नदी और समुद्र के संवाद के व्याज से विश्वामित्र गोपियों को श्रीकृष्ण के प्रति अभिसार (प्रियतम से मिलने के लिए गमन) करने की प्रेरणा दे रहे हैं। इन गोपियों में राधिका का विशेष महत्त्व होने के कारण उन्हें **'सुराधा'** कहा गया है। जिस प्रकार नदियाँ समुद्र से मिलकर अपने अस्तित्व की पूर्णता प्राप्त करती हैं, उसी प्रकार राधिका के नेतृत्व में गोपियाँ भी श्रीकृष्ण से मिलकर अपने जीवन को पूर्ण बनाती हैं—ऐसा निर्देश इस मन्त्र में निहित माना गया है।

नीलकण्ठ के अनुसार इस मन्त्र में **'शीभम्'** शब्द से श्रीकृष्ण का संकेत किया गया है। वे लिखते हैं—

शेतेऽस्मिन् सर्वमिति शीः। भाति स्वयं ज्योतिष्ट्वेन प्रकाशते इति भः। शीश्चासौ भश्चेति शीभः। तं सर्वलयाधिष्ठानचिन्मात्रस्वरूपमित्यर्थः। यदा शीभ् कत्थने। शीभन्ते कत्थन्ते श्लाघन्ते आत्मानमनेन इति शीभः। अकर्त्तरि च कारके संज्ञायामिति करणे घः। यां प्राप्य भक्ताः कृतार्थात्मानं मन्यन्ते इत्यर्थः।

अर्थात् जिस परम तत्त्व में सम्पूर्ण जगत् प्रलयकाल में स्थित रहता है, वह **'शी'** है। जो स्वयं प्रकाशस्वरूप है, वह **'भ'** है। इन दोनों के संयोग से 'शीभ' शब्द बनता है। वह सम्पूर्ण जगत् के लय का आधार तथा शुद्ध चैतन्यमात्र स्वरूप है। दूसरी व्युत्पत्ति के अनुसार **'शीभ्'** धातु का अर्थ **'कत्थने'** अर्थात् श्लाघा करना है। जिसको प्राप्त करके भक्त अपने को कृतार्थ मानते हैं, वही 'शीभ' कहलाता है। व्याकरणसूत्र **"अकर्त्तरि च कारके संज्ञायामिति करणे घः"** के अनुसार करणार्थ में **'घ'** प्रत्यय होने से यह व्युत्पत्ति सिद्ध की गई है।

स्पष्ट है कि यह सम्पूर्ण अर्थ नीलकण्ठ की मौलिक कल्पना है। नीलकण्ठ से पूर्व किसी भी वेदभाष्यकार ने इस मन्त्र का ऐसा अर्थ नहीं किया। इस मन्त्र का देवता नद्यः हैं। बारहवीं शताब्दी के भाष्यकार वेंकटमाधव ने यहाँ **'शीभम्'** का अर्थ **'शीघ्रम्'** किया है। निघण्टु (2.15) में भी **'शीभ'** शब्द **'क्षिप्र'** के पर्यायों में पठित है, और **'क्षिप्र'** का अर्थ **'शीघ्र'** ही होता है। इसी आधार पर महर्षि दयानन्द सरस्वती ने भी यहाँ **'शीभम'** का अर्थ 'शीघ्र' किया है। सायणाचार्य का अर्थ भी इसी के अनुरूप है।

अब **'सुराधा'** शब्द पर विचार करें। महर्षि दयानन्द इसका अर्थ करते हैं—

"शोभनं राधो यस्य सः"

अर्थात् जिसका धन या ऐश्वर्य उत्तम हो, वह **'सुराधा'** कहलाता है। आचार्य वेंकटमाधव ने भी **'सुराधा'** का अर्थ **'शोभनधन'** ही किया है। सायणाचार्य ने अपने भाष्य में **'सुराधा'** की व्याख्या **'शोभनधनोपेता'** के रूप में की है, जिसका अर्थ है—**"जो उत्तम धन या ऐश्वर्य से सम्पन्न हो।"**

यहाँ कोई कुतर्क कर सकता है कि देवी राधा ही श्रेष्ठ ऐश्वर्य से सम्पन्न हैं, इसलिए उन्हें **'सुराधा'** कहा गया है। किन्तु यह तर्क केवल एक शब्द को पकड़कर किया गया कल्पनात्मक अर्थ है। मन्त्र के शेष शब्द न तो गोपियों के प्रसंग में बैठते हैं और न ही श्रीकृष्ण के प्रेमप्रसंग में। सम्पूर्ण मन्त्र के सन्दर्भ की उपेक्षा करके केवल एक या दो शब्दों के आधार पर कल्पित अर्थ निकालना किसी भी विद्वत्परम्परा में स्वीकार्य नहीं है। इसलिए नीलकण्ठ का यह अर्थ निराधार ही माना जाएगा।

महर्षि दयानन्द इस मन्त्र का अर्थ करते हुए लिखते हैं—

हे मनुष्यो! जैसे उत्तम शिक्षा से युक्त वाणी की इच्छा करने वाले, धारण एवं पोषण करने वाले बुद्धिमान् पुरुष उत्तम बुद्धि का सेवन करें, जैसे बहती हुई नदियाँ अपने प्रवाह को बढ़ाती हैं, वैसे ही अन्न सिद्ध करने वाली स्त्रियों का सत्कार एवं पालन करो और उत्तम गुणों को शीघ्र प्राप्त होओ।

यहाँ यह तथ्य भी उल्लेखनीय है कि पौराणिक आचार्य भी इस मन्त्र को **विश्वामित्र और नदियों के संवाद** के रूप में ही स्वीकार करते हैं, न कि गोपियों और श्रीकृष्ण के प्रेमप्रसंग के रूप में। अतः नीलकण्ठ द्वारा प्रस्तुत यह नवीन व्याख्या न तो पूर्ववर्ती वेदभाष्य–परम्परा से समर्थित है और न ही स्वयं पौराणिक परम्परा से। इसलिए इसे ऐतिहासिक अथवा वैदिक प्रमाण के रूप में स्वीकार नहीं किया जा सकता।

पुरुषसूक्त में श्रीराधा

यदि वेद का सर्वाधिक प्रसिद्ध सूक्त कोई है, तो वह पुरुषसूक्त है। इस सूक्त के अनेक मन्त्र चारों वेदों में प्राप्त होते हैं। इसमें ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति के अद्भुत रहस्य का वर्णन है। परमपुरुष परमात्मा द्वारा ब्रह्माण्डरूपी यज्ञ के माध्यम से सम्पूर्ण सृष्टि तथा उसके विविध पदार्थों की उत्पत्ति किस प्रकार हुई, इसका निरूपण इस सूक्त में किया गया है। ऐसे सूक्त में देवी राधा का उल्लेख खोजने का प्रयास अत्यन्त हास्यास्पद प्रतीत होता है। वस्तुतः आज तक किसी भी प्राचीन वेदभाष्यकार ने ऐसा दुस्साहस नहीं किया।

श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे।
नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्।
इषाणन्निषाणामुं म इषाण सर्वलोकं म इषाण।

किन्तु हरिव्यासदेवजी ने अपने ग्रन्थ **'वेदान्तकामधेनु'** की टीका **'सिद्धान्तरत्नावली'** में इस मन्त्र में आए **'श्री'** शब्द का तात्पर्य राधा से ग्रहण किया है। उनके अनुसार श्रीविष्णु की दो पत्नियाँ हैं—एक राधा, जो यहाँ **'श्री'** शब्द से संकेतित हैं, और दूसरी **लक्ष्मी।**

यह व्याख्या अनेक प्रश्न उत्पन्न करती है। कृष्ण यजुर्वेद की **तैत्तिरीय संहिता** में इसी मन्त्र में **'श्री'** के स्थान पर **'ह्री'** शब्द प्राप्त होता है। यदि यहाँ **'श्री'** का अर्थ राधा किया जाए, तो **'ह्री'** का अर्थ क्या होगा? क्या उसे भी राधा का ही पर्याय सिद्ध किया जाएगा? ऐसे अनेक प्रश्न हैं, जिनका कोई युक्तिसंगत समाधान राधामार्गी सम्प्रदाय के विद्वानों ने प्रस्तुत नहीं किया है।

इस मन्त्र में **'श्री'** और **'लक्ष्मी'** शब्दों की व्याख्या आचार्य उव्वट ने नहीं की है। परन्तु आचार्य महीधर इनकी व्याख्या करते हुए लिखते हैं—

"यथा सर्वजनाश्रयणीया भवति सा श्रीः। श्रीयतेऽनया श्रीः सम्पदित्यर्थः।"

अर्थात् **'श्री'** का अर्थ सम्पत्ति, ऐश्वर्य अथवा समृद्धि है।

इसी प्रकार वे **'लक्ष्मी'** की व्याख्या करते हैं—

"लक्ष्यते दृश्यते जनैः सा लक्ष्मीः। सौन्दर्यमित्यर्थः।"

अर्थात् **'लक्ष्मी'** का अर्थ **सौन्दर्य** है।

महीधर के अनुसार सम्पत्ति और सौन्दर्य परमात्मा के अधीन एवं उनसे अविच्छिन्न रूप से सम्बद्ध होने के कारण उन्हें रूपक के माध्यम से **'पत्नी'** कहा गया है। यहाँ **'पत्नी'** शब्द का अर्थ किसी ऐतिहासिक अथवा लौकिक स्त्री से नहीं, बल्कि परमात्मा की शक्तियों से है।

पुरुषसूक्त पर कम–से–कम बीस प्राचीन आचार्यों के भाष्य उपलब्ध हैं। उनमें से किसी भी आचार्य ने इस मन्त्र में देवी राधा का संकेत स्वीकार नहीं किया है। अतः इस मन्त्र में देवी राधा का उल्लेख खोजने का प्रयास न तो भाष्य–परम्परा से समर्थित है और न ही वैदिक सन्दर्भ से। वस्तुतः यह केवल एक कल्पनात्मक व्याख्या है, जिसका कोई प्राचीन प्रमाण उपलब्ध नहीं है।

सम्पर्क : 9978111885

गतांक से आगे...

कौन चैन की नींद नहीं सो सकते और उसके उपाय

● प्रो. रामप्रसाद वेदालंकार

कामिनम्

जो कामी हो, सदा विषय वासनाओं में, भोग विलासों में जिसका मन लगा रहता हो, उसे भी चैन से नींद नहीं आ सकती, अर्थात् उसे भी प्रजागर–उन्निद्रता आ घेरती है।

कामी का अर्थ केवल इतना ही नहीं है कि वह भोगों में ही सदा प्रवृत्त रहता हो अपितु इसका एक और बड़ा अर्थ यह भी है कि जिसके हृदय में सदा कामनाओं का प्रवाह प्रवाहित होता रहता हो, अर्थात् कामनाओं से जिसका हृदय सदा ओत–प्रोत रहता हो, वह भी कामी कहलाता है। एक के बाद दूसरी, दूसरी के उपरान्त तीसरी, तीसरी के उपरान्त चौथी और चौथी के पश्चात् पाँचवी कामना जिसके हृदय में प्रवाहित होती रहती हो। तात्पर्य यह है कि वह 99 (निन्यान्वे) के फेर में पड़ गया हो। काम नहीं था तब उसकी इतनी ही इच्छा थी कि किसी प्रकार काम लग जाए। काम लग गया, रोजी चल गई, तो उसकी विवाह की इच्छा हुई, विवाह हो गया तो फिर सन्तान की कामना हुई। सन्तान हो गई, तो फिर उसके पालन– पोषण की, शिक्षा–दीक्षा की, उसके रोजी–रोजगार की, उसके उज्ज्वल भविष्य की कामना हुई, फिर निजी मकान की, पुत्र के विवाह की, पोते–पोतियों की, पुनः उनके उज्ज्वल एवं सुखद भविष्य की कामना हुई, इत्यादि। जो यह सोचता हो कि मेरा तो जीवन चल जायेगा आराम से क्योंकि इतना ऐश्वर्य तो है, पर मेरे बाद इन बच्चों का क्या होगा ? अतः इतना तो और होना चाहिए कि जिससे इनका सम्पूर्ण जीवन सुख–सौभाग्यों से व्यतीत हो जाये। वह ऐसा सोचता है कि जैसे उन बच्चों के हाथ–पैर आदि ही न हों और न ही बुद्धि हो कि जिससे वे स्वयं कुछ कमा–खा सकेंगे इत्यादि।

एक गृहस्थ को मैं 18 वर्षों तक अनवरत देखता रहा, उनसे समय–समय पर पूछता भी रहा कि कैसी गाड़ी चल रही है ? इस पर वह सदा ही मुझे अपना रोना रोते हुए ही मिले। कभी भी मुझे वे सन्तुष्ट मन से प्रभु का धन्यवाद करते हुए नहीं मिले। यद्यपि पति–पत्नी स्वस्थ हैं। उनके चार–पाँच बच्चे हैं, वे भी स्वस्थ हैं, सबके अंग–प्रत्यंग ठीक हैं, सभी का रंग–रूप सुन्दर है, निजी मकान है, उसमें कई कमरे हैं, व्यापार भी खूब चल रहा है, आभूषण भी इतने हैं, कि सभी बच्चों के विवाहों के अनन्तर भी पर्याप्त बचे रहेंगे। अच्छे से अच्छे वस्त्र पहनते हैं। अच्छे से अच्छा खाते–पीते हैं। खाने को प्रातः, मध्याह्न, सायं, रात को तो निश्चित है ही, पर इसके अतिरिक्त रात को सोते समय भी वे दूध आदि पीना चाहते हैं तो पी लेते हैं। इस पर भी दिन भर में खाने–पीने को नाना प्रकार के पदार्थ फल, मिष्ठान्न आदि वे खरीदते रहते हैं। व्यापार भी ठीक चल रहा है, फिर भी जब कभी मिलना हुआ, तो पूछने पर उनसे यही सुनने को मिला कि–"इस बेटी का विवाह कैसे होगा, कहाँ होगा, और फिर जहाँ होगा, पता नहीं वह लड़का कैसा होगा ? हमारी बेटी को सुखी भी रखेगा या नहीं, हमारे साथ बर्ताव ठीक करेगा या नहीं, इत्यादि। मैं सदा उन्हें यही कहता–"चिन्ता मत करो, प्रभु ने एक पुत्री दी है, तीन–चार पुत्र दिये हैं। फिर पुत्री बहुत अच्छी है, सुयोग्य है, समझदार है, स्वस्थ है, कर्मकुशल है और हँसमुख है, इत्यादि। प्रभु की कृपा से बहुत अच्छी जगह उसका विवाह हो जायेगा।" पर फिर भी उन्हें चिन्ता बराबर लगी रहती है। वे आगे कहते हैं–"घर तो है अपना, पर वह बहुत तंग है, फिर हमारे यहाँ यह नहीं, वह नहीं, आदि–आदि।" तात्पर्य यह है कि अठारह वर्षों में मुझे कभी भी उनसे यह सुनने को नहीं मिला, कि–"प्रभु की अपार कृपा से सब ठीक चल रहा है। बच्चे सब अच्छे हैं उन्हें पढ़ाने–लिखाने के लिये भी प्रभु ने सब प्रकार की सुख सुविधाएँ प्रदान कर रखी हैं। पत्नी भी बहुत अच्छी है, अतः उस प्रभु का हृदय से धन्यवाद है, आदि–आदि।"

अपनी सन्तानों तक ही वह मनुष्य सीमित रहता हो ऐसी बात नहीं अपितु वह इनसे भी आगे बढ़कर पोतों की चिन्ता भी करने लगता है। वह सोचता है–"मेरा तो जीवन समझो व्यतीत हो ही गया। बच्चों के लिये भी इतना है कि इनका भी आराम से जीवन कट जायेगा। परन्तु इन बेचारे नन्हें–मुन्ने पोतों का क्या बनेगा इत्यादि।" मैंने एक ऐसे दादा को सैन्ट्रल बैंक में दस सहस्र (10,000/–) रुपये अपने दस वर्ष के नाबालिग पोते के नाम पर जमा करवाते देखा जिसे यह सन्देह था कि–"पता नहीं कभी मेरा लड़का अर्थात् इस बालक का पिता ही सब धन खा पी जाये और इस बेचारे मेरे पोते तक कुछ रह ही न पाये।" तब यही विचार कर 10 सहस्र रुपये उस दस वर्ष के बालक के नाम उसने करा दिये और कहा मैनेजर से कि–"जब यह बच्चा बालिग हो जाये तो तब वे रुपये उसे दे दिये जाएँ।"

इस प्रकार के व्यक्ति सदा कामनाओं के प्रवाह में प्रवाहित होते रहते हैं। जहाँ एक कामना अभी पूर्ण नहीं होती होगी, अभी समाप्त नहीं होती होगी कि अगली कामना तैयार रहती है। ऐसे व्यक्ति कभी सुख की, आराम की नींद नहीं सो सकते, क्योंकि उन्हें निरन्तर ये कामनाएँ घेरे रहती हैं, तथा उनके विश्राम और चैन में बाधा डालती रहती हैं।

ऐसे व्यक्तियों को वेद के शब्दों में **'अकामो धीरोऽमृतः स्वयम्भूः रसेनतृप्तो न कुतश्चनोनः। तमेव विद्वान् न बिभाय मृत्योरात्मानं धीरमजरं युवानम्।।'** इत्यादि मन्त्रों के द्वारा उस अकाम–सर्वथा निष्काम प्रभु की उपासना करनी चाहिये। उसकी पावन छत्र–छाया में अपने आपको अनुभव करते हुए जो उचित, मर्यादित, आवश्यक और उत्तरदायित्व पूर्ण कामनाएँ हैं, वे ही करनी चाहियें, तथा उनके लिये यथोचित पुरुषार्थ करने पर तब जो कुछ भी प्रभु प्रदान करे, उसी में ही सब व्यवस्था करके सन्तोष का अनुभव करना चाहिए। क्योंकि शक्ति भर पुरुषार्थ करने पर भी अन्य हितैषी एवं बुद्धिमान् महानुभावों से यथोचित विचार–विमर्श कर लेने पर यदि जो कुछ नहीं हो पाता, तो उसके लिये व्यर्थ में चिन्ता करना अपने आपको वर्तमान में उपलब्ध हुए सुख–सौभाग्यों से भी वंचित करना है। अतः शेखचिल्ली के समान अत्यधिक कामनाएँ न करके अपनी शक्ति एवं परिस्थिति के अनुसार उचित एवं सुमर्यादित कामनाएँ करके ही सन्तुष्ट रहना आदि ही अपनी इस उन्निद्रता–उनीन्देपन की चिकित्सा है। यों तो इन कामनाओं का कोई अन्त नहीं है। जैसा कि एक ऋषि अपना अनुभव लिखता है–

आमृत्युतो नैव मनोरथानामन्तोस्ति
विज्ञातमिदं मयाद्य।
मनोरथासक्तिपरस्य चित्तं न जायते
वै परमार्थसङ्गि।।

मैंने आज यह रहस्य भली–भाँति जान लिया है कि मृत्युपर्यन्त इन कामनाओं को भोगने पर भी हमारा तो अन्त हो जाता है, परन्तु इन कामनाओं का अन्त नहीं हो पाता और इसके अतिरिक्त इन मनोरथों की आसक्ति में संलग्न चित्त परमार्थ का पथिक भी नहीं बन सकता।

मनु जी भी लिखते हैं–

न जातु कामः कामानामुपभोगेन शाम्यति।
हविषा कृष्णवर्त्मेव भूय एवाभिवर्धते।। 2.94

काम, कामनाओं की इच्छा, इच्छाओं के उपभोग से कभी शान्त नहीं होती है, प्रत्युत घृत से अग्नि के समान वह तो और भी अधिक भड़क जाती है, बढ़ जाती है। हाँ, यह बात पृथक् है कि शरीर में उनके भोगने की सामर्थ्य ही न रहे। पर शरीर के वृद्ध और जरजरीभूत हो जाने पर भी ये मन की कामनाएँ बूढ़ी नहीं होती। अतः इनकी चिकित्सा तो इनके त्याग से ही सम्भव है या फिर धर्म की, शास्त्र की, मर्यादाओं में दृढ़तापूर्वक वर्तमान रहकर ही इनका भोगना उचित है। ऐसा करने पर ही हम कामनाओं के कारण होनेवाली उन्निद्रता से मुक्त हो सकेंगे।

एक सज्जन से किसी ने कहा, "मेरे प्रिय मित्र ! देखो आप तो इस 60 वर्ष तक के जीवन में भी इस साधारण से खरीदे हुए मकान को भी ठीक–ठाक करके सुन्दर नहीं बना सके, पर हमने तो आपसे छोटी आयु में ही बहुत सुन्दर कोठी बना ली है।" उस सज्जन ने उस महानुभाव को उत्तर दिया कि–"मेरे प्यारे एवं हितैषी मित्र! मैं तो बहुत ही जल्दी अपने इन साधारण से मकान को भी छोड़कर वानप्रस्थ ले रहा हूँ और तब इससे भी साधारण कुटिया में, झोंपड़ी में निवास करते हुए मैं आत्म निरीक्षण करुँगा कि इस साधारण से मकान के क्रय करने और इसको ठीक–ठाक कराने में भी जो–जो मैंने पाप किये हैं, उन पर भी मैं प्रायश्चित्त करके अपने भीतर के भवन को निर्मल एवं ठीक–ठाक, सुन्दर बनाने का प्रयास करुँगा।" उस व्यक्ति के इस सुन्दर उत्तर को सुनकर प्रथम व्यक्ति विचारने लगा कि "देखो, कितना सुन्दर और प्रेरणाप्रद विचार है। एक ओर तो यह इस मकान को भी छोड़कर आगे जा रहा है और दूसरी ओर मैं इतनी बड़ी कोठी बनवा कर भी और अधिक कामनाओं के प्रवाह में प्रवाहित होता हुआ अपनी सुख–चैन की नींद हराम कर रहा हूँ। कितनी दयनीय दशा है मेरी !" यह सोचकर वह भी जीवन में ऐसी करवट लेता है कि फिर जो प्रभु ने दिया है उस पर ही सन्तोष कर उसका धन्यवाद करता हुआ चैन से अपना शेष जीवन व्यतीत करता है।

क्रमशः

(लेखक की पुस्तक)
'महान् विदुर के महान् उपदेश'
से साभार

☞ पृष्ठ 06 का शेष

वेदों का महत्त्व

ऋषि द्वारा स्वीकृत किये गये हैं। हाँ, सनातनी पौराणिकों के इन्द्र–इन्द्राणी (पति–पत्नी) आदि सजीव देहधारी देवता इस रूप में कल्पित हैं, अतः यह अमान्य है। (इस विषय को हमारे द्वारा रचित 'वेदार्थ–कल्पद्रुम' के प्रथम खण्ड के पृष्ठ 550 पर विस्तृत रूप में देखें।)

'आर्यसमाजी याज्ञिक पक्ष को नहीं मानते' यह आक्षेप भी सही नहीं है, क्योंकि सायण–महीधराचार्यों द्वारा प्रतिपादित केवल यज्ञपरक अबुद्धिगत अर्थ–स्थल ही अमान्य हैं, **शतपथ**–प्रतिपादित मान्य हैं। क्या कोई भी पौराणिक जगत् का मूर्धन्य विद्वान् वाममार्गी महीधर–प्रणीत अश्वमेध के यज्ञ को किसी आधुनिक समझदार राजा और रानी से अश्लीलता परक विधान से कराने का साहस जुटा सकता है? वस्तुतः नहीं, अतः यह अमान्य है।

रही भाषाविज्ञान की बात! इस विषय में हम मानते हैं कि समस्त भाषाएँ और उनके विज्ञान, सारे भाषा–वैज्ञानिक वेद तथा भास्कराचार्य के निरुक्त के ही ऋणी हैं। आधुनिक ऊटपटांग भाषाविज्ञान के आधार पर वैदिक शब्दों को नये प्रयुक्त शब्दों का विकार या विकास आर्यसमाज को अवश्य अमान्य हैं।

वेदों में नश्वर इतिहास पौराणिकों द्वारा वेद भगवान् के मत्थे मढ़ दिया गया है। भला इन पौराणिक पण्डित–पुंगवों को भी विचारना चाहिये कि जब सृष्टि के आदि में नियतानुपूर्वक वेद ऋषियों के हृदय में प्रभु ने प्रकाशित किये, जबकि न राम पैदा हुए थे, न कृष्ण और न राधा, तब वह वर्णन वेद में कैसे संगत माना जाये? फिर वेद की नित्यता कैसे रहेगी? अनित्य इतिहास के होने पर गजब तो यह है कि इन भोले पौराणिक भाइयों की भाँति अब मुसलमान भी **'मना रहे (मुहम्मद) चारु देवस्य नाम'** में अपने पैगम्बर के वर्णन का सन्दर्भ भी सिद्ध करने लगे हैं। इस पर इन्हें अनुताप नहीं होता है।

अवतारवाद की सिद्धि में आज तक किसी ने वेद में कोई प्रमाण नहीं दिखलाया। इस मान्यता का दुष्प्रभाव यह हुआ कि आज हिन्दुओं में ही सैकड़ों अवतार लेकर भगवान् बन रहे हैं। इनकी अतर्कमति से ही संन्यासी स्वामी विवेकानन्द ने भी ईश्वर और बुद्ध का अवतार ईसा मसीह को कह डाला। श्राद्ध आदि पर ग्रन्थ भरे हुए हैं। जीवित पितर, ज्ञानी महात्मा, पिता, पितामह, माता, गुरु, आदि की सेवा कर जीवितों का श्राद्ध करना तो आर्यसमाज का सिद्ध पक्ष है, परन्तु मृतकों का करना आज भी साध्य कोटि का पक्ष बना हुआ है।

अन्तिम बात वेदों के केवल आध्यात्मिक अर्थ आर्यसमाज द्वारा करने की बात कही गई है। यह तो आमूलचूल अनाधार है। सर्वप्रथम ऋषि दयानन्द ने ही प्राचीन आप्त ऋषियों के समान वेद को सब सत्य विद्याओं का मूल आधार माना है और **'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका'** में ऋषिवर ने विज्ञानपरक आकर्षणानुकर्षण, प्रकाश्याप्रकाश्य, नौ–विमान, तार–विद्या आदि अनेक विषयों की वेदमूलकता मंत्रोदाहरण देकर सिद्ध की है। महान् आश्चर्य और दुःख तो तब होता है, जबकि अनेक ग्रन्थों के महान् पौराणिक विद्वान् **श्री बलदेव उपाध्याय** अपने **'वैदिक संस्कृति और सभ्यता'** प्रतिपादक ग्रन्थ में सायणाचार्य–भूमिका–सम्पादन–प्रसंग में आर्यसमाजियों पर कटाक्ष करते हुए लिखते हैं–**"अपरंचामी वेदेषु नवीनानामपि आधुनिकैः पाश्चात्य विज्ञान–वेदिभिः प्रकाश्यं नीतानामाविष्काराणां धूम्रयान – वायुयान – तडिच्छकट–स्वनग्रहादीनां नैव कल्पितां सम्भवनामपि तुवास्तविकीं सन्तं वेदे मन्यते। सर्वेषामाविष्कृतानामाविष्काराणां च विज्ञानतत्त्वानामाकरो वेद एवेति तेषाममिमतं..... परमेषोऽपि सिद्धान्तो नैव विद्वान्मनोरमः।"** अर्थात् "वे (स्वामी दयानन्द तथा उनके अनुयायी भी) पाश्चात्य वैज्ञानिकों से आविष्कृत रेलगाड़ी, विद्युद्यान, टेलीफोन आदि की रचना–कल्पना को वेदों में वास्तविक मानते हैं और वेदों को सब आविष्कारों के तत्त्वों का भण्डार मानते हैं, परन्तु यह सिद्धान्त विद्वानों के मन को रमानेवाला किंवा (किंचित) मान्य नहीं है।"

अब कहिये, सम्मान्य त्रिवेदी जी, **"स्वनिकेतनदीपेन गृहं दग्धं स्वकीयकम्"**–"इस घर को आग लग गई घर के चिराग से!' क्या ऐसे विद्वान् सनातनियों में ही हैं, जिन्हें वेद सब सत्य विद्याओं का भण्डार स्वीकार नहीं है।

सही बात तो यह है कि यदि भूमण्डल पर जीवित रहना चाहते हो तो ऋषि दयानन्द के उदाहृत यजुर्मन्त्र के अनुसार मानव मात्र को वेद पढ़ने के अधिकार से भूषित करना होगा, क्योंकि वेद ही तो आदिम विश्व संस्कृति के प्रकाश के संवाहक रहे हैं। अपने संकीर्ण हृदय के महाकक्ष के वृहद् द्वार को खोल दो! अब तो यज्ञोपवीत गया, चोटी गयी, संयम और सदाचार की प्रतीक लंगोटी भी गयी। मेरा सम्बोधन विशेष रूप से रूढ़िकूप की लघु परिधि में पड़े ब्राह्मणब्रुवों से है। वैदिक ऋषियों की दृष्टि विशाल और व्यापक थी। उनकी ही प्रथम घोषणा थी–**"माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः"** अर्थात् "भूमि मेरी माँ है और मैं इसका पुत्र हूँ।" वे अपने में विश्व को देखते थे और विश्व–दर्शन में स्वयं को समाहित समझते थे। उनके मानस विशाल, वचन उदार और कार्य एवं व्यवहार व्यापक थे। जिस **'वसुधैव कुटुम्बकम्'** की बात आज लोग कहने लगे हैं, वे उसकी प्रतिमूर्ति थे। वे समष्टिगत चैतन्य में स्वयं को देखते थे। सर्वप्रथम महर्षि दयानन्द ने पाश्चात्य विद्वदाभास मैक्समूलर के भाष्य का खण्डन किया और वेद एवं उसकी भाषा संस्कृत को ज्ञान और प्राचीनतम लिपि बताने का घोष किया। इसीलिये मैं मानव मात्र से कहूँगा कि **"संन्यसेत् सर्वकर्माणि वेदमेकं न संन्यसेत्"**–"सब कर्मों को चाहे किसी के दबाव में आकर छोड़ना पड़े तो भी, 600 वर्षों तक यवनों की तलवारों से शिरश्छेद कराके भी जिन वेदों को हमारे पूर्वजों ने कण्ठस्थ करके उनकी रक्षा की, उन्हें नहीं छोड़ें–

ब्रह्मद्रवस्य मधुरा मृदुमञ्जुलेयं धाराऽस्तु मंगलमधुस्रुतशीतलाम्भः।
आत्मप्रशान्तिसुखदा सरसा सुगन्धा, सुप्राणसम्भृत– सुवेद–गिरि–प्रसूता।।

तात्पर्य यह कि "वेद ब्रह्मद्रव की मृदु, मधुर और मंजुल निर्मल धारा है, जो मंगलमयी मधु स्राव करनेवाली शीतल जल–राशि है। आत्मा को प्रशान्ति, सुख, रस और सुगन्ध, सुप्राण एवं शक्ति से परिपूर्ण वेद के हिमालय से यह प्रसूत हुई है। इसकी रक्षा के लिए सदैव कटिबद्ध रहो।"

पूर्व कुलपति,
कूँचापाती राम, बदायूँ (उ.प्र.)

☞ पृष्ठ 05 का शेष

पं. नगजीराम शर्मा

के लिखित पत्रों को स्वयं सावधानी के साथ देखकर उन पर छाप लगा कर फिर राजनीति के धर्मानुसार वादी और प्रतिवादी के कार्यों को स्वयं ध्यानपूर्वक विचार कर उनका निर्णय करते हैं। इस कार्य से निवृत्त हो आठवें मुहूर्त में मध्याह्न सन्ध्या कर तदनन्तर किञ्चित् समय को अपने गृहस्थ सम्बन्धी कार्यों वा शयन में निकालते हैं। तदनन्तर दशवें मुहूर्त में शौचादि से निवृत्त हो अपने सभ्यों सहित सभा में पधार कर शेष रहे वादी और प्रतिवादी के कार्यों को तथा आय और व्यय के लेखों को सावधानी के साथ समाप्त कर सब प्रजा को न्यायानुकूल विदा कर फिर तेरहवें मुहूर्त में राजनीति के साथ स्वलंकृत हो घोड़े पर सवार होकर दोनों राजकुमारों के और कई घुड़सवार सरदारों के साथ राजकीय कार्यों को देखने के लिए, कोष्ठागार, अश्वशाला, गजशाला, उष्ट्रशाला, गोशाला, काष्ठतृण सञ्चयागार और बाग–बगीचे आदि स्थान, तड़ाग और कूप आदि के कारखाने आदि को क्रमानुसार अपनी इच्छानुकूल ध्यानपूर्वक देखते हैं परंच कार्यावलोकन के बिना मिथ्या भ्रमण में क्षण भी नहीं निकालते। तदनन्तर पन्द्रहवें मुहूर्त में पीछे महलों में पधार विधानपूर्वक सायंकाल के अग्निहोत्र और सन्ध्या को कर फिर उस समय आते हुए अहलकार और सरदार आदि के साथ सभा में पधार कर उत्तमता के साथ किञ्चित् काल गान वादित्र सुन के देश के, राज्यों के और देशदेशान्तरों के आये हुए वृत्तान्तों को भी और कवि जन आदि की विचित्र वार्त्ताओं को तथा गुप्तचरों से अपने राज्य के वृत्तान्तों को सुन कर रात्रि कर चतुर्थ मुहूर्त की समाप्ति में सब को प्रसन्नता के साथ विदा कर फिर भोजन आदि के लिए रनवास में पधार जाते हैं–इस प्रकार हुजूर की दिनचर्या को सुना दोनों राजकुमारों की दिनचर्या सुनने में सायंकाल का समय हो जाने से श्री जी हुजूर स्वामी जी से विदा माँग कर महलों में पधार गए।

क्रमशः
'मैंने ऋषि दयानन्द को देखा' से साभार

पत्र/कविता

बन पाये कैलाश नहीं

तुम कोरे कंकर ही निकले बन पाये कैलाश नहीं।
ऐसे–ऐसे कर्म किये हैं, रहा तनिक विश्वास नहीं।
कितने सपने देखे लेकिन कोई सच्चा हुआ नहीं।
बहुत इलाज किया वंध्या का लेकिन बच्चा हुआ नहीं।
बड़े–बड़े झाँसों से लूटा हम तो भोले–भाले हैं।
जिनको दूध धुला समझा वो पहले से भी काले हैं।
तुम भी क्रूर शिकारी निकले हो सकते आकाश नहीं।
तुम कोरे कंकर ही निकले बन पाये कैलाश नहीं।

तट डरने लग गया बहुत ही अब मक्कार सफ़ीने से।
खून बहा जनता का तुमने धोया उसे पसीने से।
सावन जिसको समझा हमने वह जेठ का महीना था।
शीशा निकला हमने जिसको समझा शुद्ध नगीना था।
क्या तुमने भी रामराज्य को दे डाला बनवास नहीं।
तुम कोरे कंकर ही निकले बन पाये कैलाश नहीं।

सूखों को दे रहा निमंत्रण छलिया मौसम बरसाती।
बुरी नजर से लगा देखने दुलहन को हर बाराती।
'करनी' का चोला उतारकर पहना 'कथनी' का चोगा।
सत्ता में यदि जमे अँधेरे दोष तुम्हारा ही होगा।
पतझड़ के मौसम हो तुम भी हरे–भरे मधुमास नहीं।
तुम कोरे कंकर ही निकले बन पाये कैलाश नहीं।

पीड़ा की अभिव्यक्ति कर रहा जो तन–मन पर सहता हूँ।
मुझको भय लगता न किसी से सच्ची–सच्ची कहता हूँ।
मरघट के क्रन्दन में कैसे बन्दनवार सजाऊँ मैं।
अब तक मस्तक मिला न ऐसा जिस पर तिलक लगाऊँ मैं।
यह कुर्सी जागीर नहीं है क्या तुमको अहसास नहीं।
ऐसे कर्म किये हैं तुमने रहा तनिक विश्वास नहीं।

पतझड़ कब तक रोक सकेगा आती हुई बहारों से।
आखिर गिरना ही होगा इन गली–सड़ी दीवारों को।
कब करता इतिहास माफ़ झूठे मक्कार सवेरों को।
सूरज से पिटना ही पड़ता है गद्दार अँधेरों को।
कफ़न उढ़ाया जिस पर तुमने ऐसी कोई लाश नहीं।
तुम कोरे कंकर ही निकले बन पाये कैलाश नहीं।

कैसे आम मिलेंगे उनको सदा शूल जो बोयेंगे।
मजबूरों पर हँसने वाले आखिर इक दिन रोयेंगे।
बुद्धिमान हो इसीलिए संकेतों में समझाता है।
बहुत दुखी हो गया 'मनीषी' रोते–रोते गाता है।
तुम केवल रह गए पृष्ठ ही बन पाए इतिहास नहीं।
ऐसे–ऐसे कर्म किए हैं रहा तनिक विश्वास नहीं।

प्रो. डॉ सारस्वत मोहन 'मनीषी'
डी–801, बैस्टेक पार्क व्यू संस्कृति एपार्टमेंट,
सैक्टर –92, नया गुरुग्राम, हरियाणा–122505
मो. 9810835335

आदर्श और हौंसले को तोड़ न सकी ब्रितानी हुकूमत

लाहौर सैन्ट्रल जेल की ऊँची, मोटी तथा मजबूत दीवारों के अन्दर नौजवान क्रान्तिकारी जतिन्द्रनाथ दास को बन्द तो कर दिया लेकिन ब्रितानी हुकूमत उनके हिमालय से अडिग आदर्श व हौंसले को तोड़ नहीं सकी। उन्होंने अपना जीवन बलिदान कर दिया, पीछे हटने का तो प्रश्न ही नहीं था।

भारतीय राजनैतिक कैदियों को भी अंग्रेज़ों जैसी सुविधा उपलब्ध करने की माँग को लेकर जतिन्द्रनाथ ने 13 जुलाई 1929 को आमरण अनशन शुरु किया। सरकार पहले से ही क्रान्तिकारियों की निरन्तर बढ़ रही गतिविधियों व दबाव से परेशान थी। एक क्रान्तिकारी की माँग स्वीकार करना किसी भी दृष्टि से सम्भव था ही नहीं। जतिन्द्रनाथ अपने प्रण पर अडिग रहे और जेल के सीखचों के अन्दर ही वे 13 सितम्बर को भारत माता की स्वतंत्रता का सपना मन में लिए शहीद हो गये।

{संयोग देखिये, जितेन्द्रनाथ दास के जीवन में 3 अंक कितना महत्वपूर्ण रहा है। उन्होंने 13 जुलाई को आमरण अनशन प्रारम्भ किया, 13 सितम्बर को अन्तिम साँस ली, उस दिन अनशन का 63 वाँ दिन था। यदि 1929 का योग किया जाये तो यह भी 1+9+2+9=21=3 होता है}

'जतिन दा' के नाम से जनमानस में गहरी छाप छोड़ने वाले इस क्रान्तिकारी का जन्म कोलकाता के अमितघोष मार्ग पर स्थित एक मोटर ट्रेनिंग स्कूल के अहाते में 27 अक्टूबर 1904 में हुआ। प्रारम्भिक शिक्षा से ही उनकी प्रतिभा की झलक दिखाई देने लगी। हाईस्कूल व इण्टर की शिक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। इस बीच आज़ादी के लिए संघर्षरत क्रान्तिकारियों से उनका सम्पर्क बढ़ता गया और बन गये 'क्रान्तिदूत'।

शचीन्द्र नाथ सान्याल ने उन्हें बम बनाने का प्रशिक्षण दिया किन्तु पुलिस की पैनी नज़रों से जतिन दा की गतिविधियाँ अधिक दिनों तक सुरक्षित नहीं रहीं। नवम्बर 1925 में ग्रेजुएशन की पढ़ाई के दौरान पुलिस ने उन्हें गिरफ्तार किया। जेल में जब उन्होंने भारतीय कैदियों के साथ दोयम दर्जे का व्यवहार देखा तो यह क्रान्तिकारी पहली बार विरोध में बोला। 20 दिन की भूख हड़ताल के बाद जेल प्रशासन जागा। जेलर ने खेद व्यक्त किया। यहीं से जतिन दा पुलिस की आँखों की किरकिरी बन गये।

क्रान्ति से देश की स्वतंत्रता को अपना जीवन समर्पित करने वाले जतिन दा पर सी.आई.डी. की पैनी नजर लगातार लगी रही और वे पुलिस को चकमा देकर अपनी गतिविधियों को आगे बढ़ाते रहे। बंगाल क्रान्तिकारियों का गढ़ था, इससे अंग्रेज़ अधिकारी न केवल परेशान थे, बल्कि भयभीत भी थे। न जाने कब व कहाँ, कोई क्रान्तिकारी हमला कर दे।

14 जून 1929 को जतिन्द्रनाथ दास को पुलिस ने दूसरी बार गिरफ्तार किया। इस बार उन्हें सीधे लाहौर भेज दिया, क्योंकि यहाँ की सैन्ट्रल जेल सुरक्षित मानी जाती थी। इसी जेल की दीवारें उनके महाप्रयाण की साक्षी भी हैं।

दुर्गावती देवी उनकी पार्थिव देह लेने जेल गईं। अगले दिन उनकी अर्थी ट्रेन से हावड़ा के लिए ले जाई गयी। हज़ारों नम आँखों ने लाहौर स्टेशन पर उनको अन्तिम विदाई दी। कानपुर में गणेश शंकर विद्यार्थी ने शहीद को पुष्प अर्पित किये। 16 सितम्बर को ट्रेन हावड़ा स्टेशन पहुँची।

सुभाष चन्द्र बोस स्वयं शहीद की पार्थिव देह लेने स्टेशन आये और कन्धा दिया। चारों ओर जनसमूह ही जनसमूह। कहा जाता है 'दो मील लम्बा जुलूस' था, शहीद के अन्तिम संस्कार का। कालीवाड़ी शमशान घाट पर दाह–संस्कार किया गया। चिता की राख को लोगों ने माथे पर लगाया।

स्वामी गुरुकुलानन्द कच्वाहारी
पिथौरागढ़ (उत्तराखण्ड)
'भारत में अंग्रेजी साम्राज्य और स्वतन्त्रता संग्राम' से साभार

****

डी.ए.वी. सैक्टर 39-डी, चण्डीगढ़ में वनमहोत्सव सप्ताह

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, सेक्टर 39 डी, चंडीगढ़ में वन महोत्सव सप्ताह के उपलक्ष्य में वृक्षारोपण किया गया। विद्यालय के विद्यार्थियों ने अत्यंत उत्साह, समर्पण एवं जिम्मेदारी के साथ विद्यालय परिसर में विभिन्न प्रकार के छायादार, फलदार एवं औषधीय पौधों का रोपण किया।

इस अभियान का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों में प्रकृति के प्रति प्रेम, पर्यावरण संरक्षण की भावना तथा पृथ्वी को हराभरा एवं प्रदूषणमुक्त बनाने के प्रति उत्तरदायित्व विकसित करना था। विद्यार्थियों ने न केवल पौधे लगाए, बल्कि उनकी नियमित देखभाल, सिंचाई एवं संरक्षण का संकल्प भी लिया।

कार्यक्रम के दौरान विद्यार्थियों ने पर्यावरण संरक्षण से जुड़े प्रेरणादायक संदेश, नारों एवं विचारों के माध्यम से सभी को अधिक से अधिक वृक्ष लगाने के लिए प्रेरित किया। बच्चों ने पूरे उत्साह के साथ यह संदेश दिया–"एक पौधा अवश्य लगाएँ, प्रकृति को बचाएँ", "पेड़ हैं तो कल है" तथा "हर पौधा, हरियाली की नई शुरुआत"।

प्राचार्या श्रीमती मर्नीदर वोहरा ने कहा कि 'आज लगाया गया एक पौधा आने वाली पीढ़ियों को स्वच्छ, स्वस्थ एवं सुरक्षित भविष्य प्रदान करेगा। प्रकृति की रक्षा करना प्रत्येक नागरिक का नैतिक कर्तव्य है।'

सभी विद्यार्थियों एवं शिक्षकों ने अपने आसपास के वातावरण को स्वच्छ बनाए रखने का संकल्प लिया।

डी.ए.वी. सफिलगुड़ा, हैदराबाद में आयोजित हुआ 'राष्ट्रीय पठन दिवस'

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, सफिलगुड़ा, हैदराबाद में **'राष्ट्रीय पठन दिवस'** मनाया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य का आयोजन किया गया। विद्यार्थियों ने पुस्तक समीक्षा, वाचन प्रतियोगिता, कहानी–कथन, कविता–पाठ तथा पुस्तक प्रदर्शनी में उत्साहपूर्वक भाग

विद्यार्थियों में पठन–पाठन की आदत विकसित करना तथा पुस्तकों के प्रति रुचि जागृत करना था।

कार्यक्रम का शुभारंभ विद्यालय की प्रार्थना सभा से हुआ। विद्यार्थियों को पठन के महत्व से अवगत कराया गया तथा नियमित अध्ययन को जीवन में सफलता की कुंजी बताया गया।

प्राचार्य श्री वी एन एन के शेषाद्रि ने अपने संबोधन में कहा कि पुस्तकें ज्ञान, संस्कार और व्यक्तित्व विकास का सर्वोत्तम माध्यम हैं। उन्होंने विद्यार्थियों को प्रतिदिन कुछ समय पुस्तकों के अध्ययन के लिए समर्पित करने की प्रेरणा दी।

राष्ट्रीय पठन दिवस के उपलक्ष्य में विद्यालय में विभिन्न गतिविधियों लिया। विद्यालय पुस्तकालय में विशेष पठन सत्र आयोजित किया गया, जहाँ विद्यार्थियों ने अपनी रुचि की पुस्तकों का अध्ययन किया और अपने विचार साझा किए।

शिक्षकों ने भी विद्यार्थियों को उत्कृष्ट साहित्य पढ़ने और डिजिटल माध्यमों के साथ–साथ पुस्तकों से जुड़ने का संदेश दिया।

विद्यार्थियों ने पठन संस्कृति को बढ़ावा देने तथा नियमित अध्ययन करने की शपथ भी ली।

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, सफिलगुड़ा द्वारा आयोजित यह कार्यक्रम सभी प्रतिभागियों के लिए प्रेरणादायक एवं ज्ञानवर्धक रहा।

आर्य समाज श्री गंगानगर में प्रतिभा सम्मान समारोह

आर्य समाज श्री गंगानगर ने प्रतिभा सम्मान समारोह का आयोजन किया और स्वतंत्रता सेनानी चौधरी नारायण राम जी गोदारा की श्रद्धांजलि सभा का का आयोजन किया। पं. नागेंद्र शास्त्री और पं. विक्रांत शास्त्री द्वारा वैदिक यज्ञ कराया गया। अमित गोदारा सपत्नीक संदीप जी माझू ने विद्यार्थियों में सेवा कार्य और अनुशासन के महत्व के ऊपर प्रकाश डाला।

बच्चों ने बहुत मन मोहक सांस्कृतिक प्रस्तुति दी। डॉ. निशा सियाग का स्वागत किया गया।

इस आयोजन में आर्य समाज श्री गंगानगर के उप प्रधान डॉ गौर मोहन

यजमान ने यज्ञ किया।

चौधरी नारायण राम जी गोदारा के सभी परिवार जनों ने उनके देश प्रेम और आर्य समाज श्री गंगानगर में किए गए कार्यों को याद किया। प्रमुख वक्ता पूर्व DIG पुलिस, श्री दिलीप जी जाखड़ ने अपने संबोधन में कहा कि नई पीढ़ी अकादमी के साथ–साथ नई नई आधुनिक तकनीक से जुड़े और खेल के माध्यम से अपनी शारीरिक शक्ति को विकसित करें।

प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को सम्मानित करते हुए श्री सुनील दामरी ने एकाग्रता से अध्ययन पर बल दिया। हिंदुस्तान स्काउट गाइड के CO श्री माथुर, कोषाध्यक्ष श्रीमति राज सक्सेना, श्री आनन्द धवन पुस्तकालयाध्यक्ष, श्री देवेन्द्र कार्यकारिणी सदस्य, श्रीमती अलका माथुर, स्त्री आर्य समाज की प्रधाना श्रीमती कल्पना वर्मा, श्री हरि राम कूकना मैनजर महर्षि दयानंद शिक्षण संस्थान श्री गंगानगर, श्री जसवंत गोदारा, सदस्य महर्षि दयानंद शिक्षण संस्थान श्री गंगानगर, बच्चों के अभिभावक तथा गणमान्यव्यक्तियों की गरिमामयी उपस्थिति रही।

श्री रतन भटनागर, प्रधान, ने सभी अतिथियों का धन्यवाद किया।

समारोह का समापन शांति पाठ से किया।

Registration No. R.N.I. 39\57
Delhi Postal R. No. D.L. (ND)-11\6066\2024-25-26
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसैंस नं. U(C)-103\2024-25-26
Posted at L.P.C.(Delhi RMS)D110006 ON Wednesday & Thursday, 2026

पद्मश्री डॉ. पूनम सूरी जी ने डी.ए.वी. कोटा में वृक्षारोपण करके पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया

डी.ए.वी कॉलेज मैनेजिंग कमेटी नई दिल्ली एवम् आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के प्रधान आर्य रत्न, पद्मश्री डॉ पूनम सूरी जी ने कोटा स्थित डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल में विभिन्न गतिविधियों में भाग लिया।

डॉ. पूनम सूरी जी ने आदरणीया श्रीमती मणि सूरी जी के साथ वृक्षारोपण किया। उन्होंने कहा कि वर्षा ऋतु में अधिकाधिक पौधे लगाने का संकल्प लें और इसमें छात्रों की सहभागिता सुनिश्चित की जाए जिससे हम पर्यावरण को स्वच्छ और सुरक्षित रख सकें।

प्रधान जी ने कक्षा दसवीं और बारहवीं के छात्रों को उनके उत्कृष्ट परीक्षा परिणाम के लिए सम्मानित किया और समाज के लिए उपयोगी नागरिक बनने का आह्वान किया। उन्होंने आर्य समाज कोटा के प्रतिनिधि मंडल के साथ बैठक की जिसमें कोटा आर्य समाज द्वारा किए गए समाज सेवा और वेद प्रचार के कार्यों की जानकारी ली तथा उनके द्वारा किए गए कार्यों की प्रशंसा भी की।

मान्य प्रधान जी ने कहा कि आर्य समाज का छठा नियम हमें संसार का उपकार करने के लिए प्रेरित करता है इसलिए हम सभी वैदिक सिद्धांतों का पालन करते हुए समाज को जागृत करें।

विद्यालय की प्राचार्या श्रीमती पल्लवी अरोड़ा ने बताया कि आदरणीय प्रधान जी के नेतृत्व में डीएवी स्कूल कोटा शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर रहा है और उनके यहाँ पधारने से न केवल शिक्षक वर्ग बल्कि समस्त विद्यालय परिवार और अच्छा कार्य करने के लिए प्रेरित हुआ है।

इस अवसर पर श्रीमती सरिता रंजन गौतम, श्री एम पी सिंह व कोटा मंडल के अन्य डीएवी विद्यालयों के प्रधानाचार्यों का भी सान्निध्य प्राप्त हुआ।

डी.ए.वी. लक्कड़ बाजार शिमला में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन

'समत्वं योग उच्यते' के संदेश को आत्मसात करते हुए डी.ए.वी. सीनियर सेकेंडरी पब्लिक स्कूल लक्कड़ बाजार, शिमला में 21 जून, 2026 को प्राणायाम तथा ध्यान का अभ्यास किया। ताड़ासन, उत्कटासन, वृक्षासन, त्रिकोणासन, वज्रासन, अनुलोम–विलोम, कपालभाति एवं भ्रामरी जैसे योगाभ्यासों ने सभी को ऊर्जा, एकाग्रता

अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस गरिमापूर्ण वातावरण में मनाया गया जिसमें लगभग 2000 विद्यार्थियों एवं अध्यापकों ने भाग लिया। प्रत्येक प्रतिभागी ने नियमित रूप से योगाभ्यास करने का संकल्प लिया।

कार्यक्रम का शुभारंभ वैदिक मंत्रोच्चारण से किया गया। इसके पश्चात् प्रशिक्षित योग शिक्षकों के निर्देश में विद्यार्थियों एवं अध्यापकों ने सामूहिक रूप से विभिन्न योगासनों, एवं आत्मविश्वास से भर दिया।

विद्यालय की प्रधानाचार्या ने अपने संबोधन में कहा कि योग केवल व्यायाम ही नहीं बल्कि स्वस्थ, संतुलित और सार्थक जीवन जीने की कला है। योग भारत की अमूल्य सांस्कृतिक धरोहर है। उन्होंने महर्षि दयानंद सरस्वती द्वारा प्रतिपादित स्वस्थ तन, स्वस्थ मन और श्रेष्ठ चरित्र के आदर्शों को अपनाने का भी आह्वान किया।

एस.आर. डी.ए.वी. पुंडाग, रांची में जागरूकता कार्यक्रम

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, झारखंड के तत्त्वावधान में एस. आर. डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, पुंडाग, रांची में 'साइबर सुरक्षा एवं नो नशा नेशन' विषय पर एक जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम का शुभारम्भ मुख्य

साथ ही उन्होंने व्यक्तिगत जानकारी की सुरक्षा, ओटीपी एवं बैंकिंग संबंधी धोखाधड़ी से बचाव, सशक्त पासवर्ड का उपयोग, सुरक्षित वेबसाइटों की पहचान तथा साइबर अपराध की त्वरित शिकायत करने के बारे में महत्वपूर्ण सुझाव दिए।

श्री पंकज कुमार ने 'नो नशा नेशन' अभियान के अंतर्गत नशे के शारीरिक,

अतिथि डीएसपी साइबर क्राइम, श्री प्रदीप कुमार द्वारा दीप प्रज्वलन से किया गया।

मुख्य अतिथि ने विद्यार्थियों को साइबर सुरक्षा के विभिन्न पहलुओं से अवगत कराया। उन्होंने फिशिंग, ऑनलाइन धोखाधड़ी, पहचान की चोरी, साइबर बुलिंग, फर्जी वेबसाइटों, वित्तीय ठगी तथा सोशल मीडिया के दुरुपयोग जैसे साइबर अपराधों की जानकारी दी।

मानसिक एवं सामाजिक दुष्प्रभावों पर प्रकाश डाला। उन्होंने विद्यार्थियों को नशे से दूर रहकर अनुशासित, स्वस्थ एवं सकारात्मक जीवन अपनाने के लिए प्रेरित किया।

सहायक क्षेत्रीय पदाधिकारी श्री एम.के. सिन्हा ने बताया कि झारखंड में एस.आर. डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, पुंडाग से 'नो नशा नेशन' अभियान का शुभारम्भ किया गया है।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा मंदिर मार्ग के लिए **एस.के शर्मा** द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित **फर्स्ट इम्प्रैशन कार्पोरेट सर्विसिज, (प्रा.) लि.,** ई.113–114, सैक्टर–63, नोएडा, उ.प्र.–201301 (दूरभाष : 120–4246315) से मुद्रित एवं कार्यालय **'आर्य जगत्'** आर्यसमाज भवन मंदिर मार्ग नई दिल्ली से प्रकाशित मो.–9868894601, 23362110, 23360059 सम्पादक – **पूनम सूरी**